राष्ट्र सेवा में सहभागी बनें

हिंदी विवेक
WE WORK FOR A BETTER WORLD
Issue : 17 - 23 May 2026

राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत करनेवाली
सामाजिक व पारिवारिक पत्रिका

हिंदी विवेक
We Work For Better World

पंजीयन करें

सेवा विवेक ग्रंथ

मौलिक एवं संग्रहणीय ग्रंथ, स्वयं एवं परिजनों के लिए पंजीयन करें

ग्रंथ प्रकाशन का उद्देश्य

भारत की आत्मा ...सेवा। जो केवल सहायता या दान नहीं है।

सेवा का सही अर्थ है कर्तव्य, संवेदना और सामाजिक उत्तरदायित्व का समन्वय।

सेवा को भावनात्मक कार्य से आगे ले जाकर विचारशील, सामाजिक प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करना।

सेवा के पीछे की भारतीय दृष्टि, प्रेरणा और दर्शन को उजागर करना।

इस विचार को बल देना कि सेवा व्यक्ति को संस्कारित कर समाज को संगठित एवं सशक्त करने का प्रभावी माध्यम है।

आदर्श सेवा कार्यों को संकलित कर समाज के प्रबुद्ध पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करना।

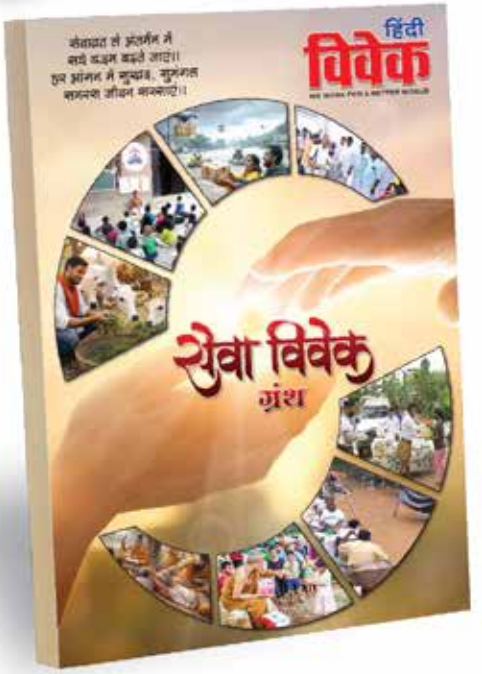

प्रकाशन पूर्व मूल्य
600/-

ग्रंथ का मूल्य
₹700/-

देश के गणमान्य विशेषज्ञों एवं लेखकों की कलम से समृद्ध विषय वस्तु से परिपूर्ण ग्रंथ

ऑनलाइन पेमेंट करने के बाद कृपया 9594991884 पर कॉल करके सूचित करें या व्हाट्सअप करें।

Draft or Cheque should be drawn in the name of : HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank : State Bank of India
Branch : Charkop
A/C No. : 43884034193
IFSC : SBIN0011694

स्थानीय प्रतिनिधि से सम्पर्क करें
कार्यालय : सहारा नांगरे - 9594991884
Email : hindivivekvargani@gmail.com

अनुक्रमणिका

आत्मनिर्भर भारत का आर्थिक मंत्र	पंकज जायसवाल	04
संकट में संकल्प का समय	ललित गर्ग	06
सोने-चांदी की अनावश्यक खरीद से बचें	प्रमोद जोशी	08
स्वाद और अनुभूति की एक चुस्की	डॉ. सौरभ मालवीय	11
वाह! क्या चाय है	स्निग्धा अवतंस	13
चाय में छिपी अर्थव्यवस्था	दीपक कुमार द्विवेदी	14
जलसंकट बनता रोड़ा	डॉ. अर्पण जैन 'अविचल'	17
हनी ट्रैप पर बीसीसीआई के कड़े तेवर	भास्कर दूबे	19
हम तो भई ऐसे हैं...	डॉ. मोनिका शर्मा	21
संघ वृक्ष के परिपक्व फल मधुभाई कुलकर्णी	विजय कुमार	24
ऊंची उड़ान भरते भारतीय खेल	प्रवीण सिन्हा	25
आप इन झांसों में मत आइए...	संकलन	27
एक दृष्टि इधर भी	संकलन	28

पंजीयन शुल्क

वार्षिक मूल्य : 500 रुपये, त्रैवार्षिक मूल्य : 1200 रुपये
पंचवार्षिक मूल्य : 1800 रुपये, आजीवन मूल्य : 25,000 रुपये

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

कार्यालय : प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर-10, सेक्टर-2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई- 400067 फोन नं. : 022-28675299, 022-28678933

आह्वान

प्रधान मंत्री की अपील भारत के लिए एक नए आर्थिक अनुशासन का आह्वान है। आने वाले समय में वही देश मजबूत होंगे जो उत्पादन, ऊर्जा, खाद्य और वित्तीय सुरक्षा में आत्मनिर्भर होंगे। भारत के पास विशाल बाजार, युवा शक्ति, कृषि क्षमता और उद्यमशीलता है।

आत्मनिर्भर भारत का आर्थिक मंत्र

ईरान-अमेरिका-इजराइल के बीच शुरू हुए युद्ध, होर्मुज स्ट्रेट में डबल नाकाबंदी और उससे उपजे वैश्विक मंदी और इकोनॉमिक्स के मेटा इफेक्ट के कारण दुनिया के हालात संकट में हैं। इन संकटों के बीच भारत आज एक ऐसे दौर से गुजर रहा है जहां प्रधान मंत्री मोदी द्वारा शूरू किए गए आर्थिक राष्ट्रवाद, आत्मनिर्भरता और जिम्मेदार उपभोग केवल नारे नहीं बल्कि राष्ट्रीय आवश्यकता बन चुके हैं।

हाल ही में प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा देशवासियों से सोना खरीदने में संयम बरतने, पेट्रोलियम उत्पादों के उपयोग को कम करने, स्वदेशी को बढ़ावा देने और अनावश्यक आयात पर निर्भरता घटाने की जो अपील की गई, वह केवल एक सामान्य आर्थिक सलाह नहीं है बल्कि एक कुटुम्ब प्रबोधन की तरह भारत की दीर्घकालिक आर्थिक सुरक्षा, विदेशी मुद्रा संतुलन और आत्मनिर्भर विकास मॉडल का महत्वपूर्ण संकेत है। भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है, लेकिन इसके बाद भी हमारी कई आधारभूत आवश्यकताएं अभी भी आयात पर आधारित हैं। विशेष रूप से कच्चा तेल, खाद्य तेल और सोना ये तीन ऐसे क्षेत्र हैं जो भारत के आयात बिल पर भारी दबाव डालते हैं। ऊर्जा के मामले में तो हम लगभग 85 प्रतिशत दूसरों पर निर्भर हैं और इस समय ऊर्जा की ही सप्लाई चेन संकट में आ गई है। यदि देश को वास्तव में एक विकसित राष्ट्र बनना है तो केवल उत्पादन बढ़ाना पर्याप्त नहीं होगा बल्कि उपभोग की संस्कृति और आर्थिक व्यवहार में भी परिवर्तन लाना पड़ेगा।

पंकज जायसवाल

जैसे भारत में सोना केवल धातु नहीं बल्कि परम्परा, सामाजिक प्रतिष्ठा और सुरक्षा का प्रतीक माना जाता है। विवाह, त्योहारों और पारिवारिक निवेश का बड़ा हिस्सा सोने में जाता है, लेकिन आर्थिक दृष्टि से देखा जाए तो एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठता है क्या अत्यधिक सोना खरीदना राष्ट्र की अर्थव्यवस्था के लिए लाभकारी है? मेरे विचार से यदि सोना अर्थव्यवस्था में सक्रिय रूप से उपयोग नहीं हो रहा, उत्पादन या व्यापार में नहीं लग रहा, बैंकिंग प्रणाली में नहीं आ रहा और केवल लॉकरों में बंद पड़ा है तो वह एक प्रकार का मृत निवेश बन जाता है क्योंकि वह पूंजी अर्थव्यवस्था में गति नहीं पैदा करती। जब कोई व्यक्ति सोना खरीदता है तो उसका बड़ा हिस्सा आयात के माध्यम से विदेशों में चला जाता है। इसका अर्थ है कि देश की विदेशी मुद्रा बाहर जाती है। दूसरी ओर यदि वही पैसा उद्योग, स्टार्टअप, शेयर बाजार, कृषि प्रसंस्करण, विनिर्माण या इंफ्रास्ट्रक्चर में निवेश हो तो वह रोजगार पैदा करता है, उत्पादन बढ़ाता है और कर राजस्व भी उत्पन्न करता है। यह कहना गलत नहीं होगा कि अत्यधिक निष्क्रिय सोना भारतीय अर्थव्यवस्था की उत्पादक क्षमता को सीमित करता है। इसलिए सरकार द्वारा गोल्ड बॉन्ड, डिजिटल गोल्ड और गोल्ड मोनेटाइजेशन जैसी योजनाएं लाने का उद्देश्य भी यही है कि सोना आर्थिक परिसंचरण में आए। जब संकट का समय हो तो आभूषण से ज्यादा यह बात अर्थ रखती है कि हम सेविंग और उत्पादकीय निवेश बढ़ाएं, सोने की वह खरीद जो केवल आभूषणों के लिए की जाती है, उसे कुछ समय तक टाला जा सकता है।

भारत अपने कुल पेट्रोलियम उपभोग का एक

बड़ा हिस्सा आयात करता है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में तेल की कीमतें बढ़ते ही भारत का आयात बिल बढ़ जाता है, रुपया दबाव में आता है और महंगाई भी बढ़ती है। पेट्रोल-डीजल केवल वाहन चलाने तक सीमित नहीं हैं, परिवहन महंगा होने से खाद्यान्न, निर्माण सामग्री और दैनिक उपयोग की वस्तुएं भी महंगी हो जाती हैं। ऐसी स्थिति में प्रधान मंत्री की यह अपील कि देशवासी पेट्रोलियम उत्पादों का विवेकपूर्ण उपयोग करें, अत्यंत व्यावहारिक और दूरदर्शी है। यह केवल ईंधन बचाने का प्रश्न नहीं बल्कि आर्थिक सम्प्रभुता का विषय भी है।

यदि प्रत्येक परिवार छोटी-छोटी आदतें बदल दे, जैसे अनावश्यक वाहन उपयोग कम करना, सार्वजनिक परिवहन अपनाना, कार- पूल करना, इलेक्ट्रिक वाहन की ओर बढ़ना, स्थानीय वस्तुओं का उपयोग करना तो इसका सामूहिक प्रभाव बहुत बड़ा हो सकता है। मान लीजिए देश के करोड़ों परिवार यदि प्रतिदिन थोड़ी मात्रा में ईंधन बचाते हैं तो सालाना अरबों डॉलर की विदेशी मुद्रा बचाई जा सकती है। यही धन देश के इंफ्रास्ट्रक्चर, शिक्षा, स्वास्थ्य और रक्षा क्षेत्रों में लगाया जा सकता है। भारत में लम्बे समय तक उपभोग आधारित अर्थव्यवस्था का बड़ा हिस्सा विदेशी ब्रांडों और आयातित वस्तुओं की ओर झुकता गया, लेकिन अब विश्व व्यवस्था बदल रही है। अमेरिका-चीन व्यापार युद्ध, रूस-यूक्रेन संघर्ष, वैश्विक सप्लाई चेन संकट और महामारी ने यह स्पष्ट कर दिया कि किसी भी देश के लिए अत्यधिक आयात निर्भरता घातक हो सकती है। ऐसे समय में स्वदेशी का अर्थ केवल भावनात्मक राष्ट्रवाद नहीं बल्कि रणनीतिक आर्थिक सुरक्षा होनी चाहिए। जब हम स्थानीय उत्पाद खरीदते हैं तो केवल वस्तु नहीं खरीदते, हम किसी भारतीय किसान, छोटे उद्योग, मजदूर, ट्रांसपोर्टर और व्यापारी की आय को मजबूत करते हैं। स्थानीय उत्पादन बढ़ने से रोजगार बढ़ता है और आर्थिक शक्ति देश के भीतर घूमती रहती है। यदि भारतीय उपभोक्ता स्वदेशी वस्तुओं को प्राथमिकता देंगे, तभी भारतीय उद्योग वैश्विक प्रतिस्पर्धा में मजबूत हो पाएंगे।

कोरोना काल में भी हमने देखा कि अनावश्यक खर्च कम होने पर परिवारों की बचत बढ़ी। लोगों ने स्थानीय वस्तुओं, घर के भोजन और सीमित उपभोग की ओर वापसी की। इससे यह स्पष्ट हुआ कि आर्थिक अनुशासन केवल सरकार की नीतियों से नहीं बल्कि नागरिकों की जीवनशैली से भी आता है।

***

स्वयं के लिए और अपने परिजनों के लिए ग्रंथ का पंजीयन करें

इस ग्रंथ में आप पढ़ेंगे

- संघ में हो रहे अनगिनत सेवा कार्यों का परिणाम क्या है?
- डॉ. हेडगेवार जी से लेकर डॉ. मोहन भागवत जी तक के सभी सरसंघचालकों का दिशादर्शन...
- राजनीति को केंद्र में न रखकर राष्ट्रीयत्व को क्यों केंद्र में रखा?
- भारत के सम्मुख चुनौतियां और संघ कार्य का प्रभाव
- संघ विचारधारा और परिवर्तन

जैसे विविध मौलिक विषय

ग्रंथ का मूल्य ₹700/-

ईमेल – hindivivekvargani@gmail.com

Draft or Cheque should be drawn in the name of HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank Details : State Bank of India, Branch - Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

सम्पर्क

प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483

भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

संकट में संकल्प का समय

ललित गर्ग

प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी की अपील, लाल बहादुर शास्त्री की प्रेरणा और भारतीय संस्कृति के संयममूलक जीवन-दर्शन को अपनाकर ही भारत इस वैश्विक महंगाई के संकट का प्रभावी ढंग से सामना कर सकता है। यह समय भय और निराशा का नहीं बल्कि जागरूकता, आत्मसंयम और राष्ट्रीय संकल्प का है।

आज पूरा विश्व एक गहरे आर्थिक असंतुलन और महंगाई के संकट से गुजर रहा है। रूस-यूक्रेन युद्ध के बाद अब खाड़ी क्षेत्र में बढ़ते तनाव और युद्ध जैसी परिस्थितियों ने वैश्विक अर्थव्यवस्था को पुनः अस्थिर कर दिया है। तेल उत्पादक देशों में तनाव बढ़ने से कच्चे तेल की कीमतों में लगातार उतार-चढ़ाव हो रहा है। इसका सीधा प्रभाव उन देशों पर पड़ रहा है जो ऊर्जा के लिए आयात पर निर्भर हैं। भारत भी इस संकट से अछूता नहीं है। पेट्रोल-डीजल, रसोई गैस, खाद्य पदार्थ, परिवहन, चिकित्सा और दैनिक उपयोग की वस्तुओं की बढ़ती कीमतों ने सामान्य नागरिक के जीवन को कठिन बना दिया है। मध्यम वर्ग और गरीब वर्ग पर इसका सबसे अधिक प्रभाव दिखाई दे रहा है।

महंगाई केवल आर्थिक समस्या नहीं है, यह सामाजिक और नैतिक संकट भी है। जब वस्तुओं के दाम बढ़ते हैं तो केवल जेब पर बोझ नहीं बढ़ता बल्कि व्यक्ति के भीतर असुरक्षा, तनाव और असंतोष भी बढ़ता है। परिवारों का बजट बिगड़ता है, बचत समाप्त होने लगती है और जीवन की प्राथमिकताएं बदल जाती हैं। ऐसे समय में केवल सरकारों से समाधान की अपेक्षा करना पर्याप्त नहीं है। राष्ट्र को संकट से उबारने के लिए जनता की सहभागिता, संयम और सामूहिक उत्तरदायित्व भी उतना ही आवश्यक है।

भारत ने इतिहास में अनेक संकटों का सामना सामूहिक संकल्प और त्याग से किया है। पूर्व प्रधान मंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने अन्न संकट के समय देशवासियों से सप्ताह में एक दिन उपवास रखने और एक समय भोजन छोड़ने की अपील की थी। यह केवल प्रशासनिक निर्णय नहीं था बल्कि राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण करने वाला नैतिक आह्वान था। देश ने उस आह्वान को स्वीकार किया और उसका व्यापक सकारात्मक प्रभाव पड़ा। आज परिस्थितियां भिन्न अवश्य हैं, लेकिन आवश्यकता फिर उसी प्रकार के आत्मसंयम और सामाजिक चेतना की है।

प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी भी समय-समय पर सादगी, संयम, आत्मनिर्भरता और मितव्ययी जीवनशैली की बात करते रहे हैं। उन्होंने वोकल फॉर लोकल, ऊर्जा बचत, जल संरक्षण, मोटे अनाजों के उपयोग, अनावश्यक खर्चों में कमी और स्वदेशी उत्पादों को अपनाने का जो संदेश दिया है, वह केवल आर्थिक कार्यक्रम नहीं बल्कि राष्ट्रीय जीवनशैली का नया दर्शन है। उनका यह आग्रह अत्यंत प्रासंगिक है कि संकट के समय देशवासियों को केवल उपभोक्ता नहीं बल्कि जिम्मेदार नागरिक बनकर सोचना चाहिए। यदि समाज स्वयं अनुशासित और जागरूक बने तो बड़े से बड़ा आर्थिक संकट भी नियंत्रित किया जा सकता है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अपनी जीवनशैली की समीक्षा करें। महंगाई का एक बड़ा कारण उपभोग की अंधी दौड़ और दिखावे की संस्कृति भी है। आवश्यकताओं को इच्छाओं में और इच्छाओं को प्रतिष्ठा का प्रतीक बना देने से समाज में अपव्यय बढ़ा है। विवाह, उत्सव और सामाजिक आयोजनों में बढ़ती फिजूलखर्ची संसाधनों पर अनावश्यक दबाव बनाती है। यदि व्यक्ति सीमित आवश्यकताओं और संतुलित उपभोग का मार्ग अपनाए तो परिवार और राष्ट्र-दोनों की आर्थिक स्थिति मजबूत हो सकती है। भारतीय संत परम्परा और साधु-साध्वियों का जीवन हमें संयम और संतोष का यही संदेश देता है। उनका जीवन बताता है कि सुख वस्तुओं के अधिक संग्रह में नहीं बल्कि इच्छाओं की मर्यादा में है। अपरिग्रह, मितव्ययिता और सादगी भारतीय संस्कृति के मूल मूल्य रहे हैं। आधुनिक उपभोक्तावादी संस्कृति ने इन मूल्यों को कमजोर अवश्य किया है, लेकिन आज का संकट पुनः हमें इन्हीं मूल्यों की ओर लौटने का संकेत दे रहा है। यदि समाज सीमित संसाधनों में संतुलित जीवन जीना सीख ले तो महंगाई का दबाव बहुत सीमा तक कम हो सकता है।

खाड़ी युद्ध का सबसे बड़ा प्रभाव ऊर्जा क्षेत्र पर पड़ता है। भारत अपनी तेल आवश्यकताओं का बड़ा हिस्सा आयात करता है। जब अंतरराष्ट्रीय बाजार में तेल महंगा होता है तो परिवहन लागत बढ़ती है और उसका प्रभाव लगभग हर वस्तु पर दिखाई देता है। ऐसे समय में भारत को ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों पर अधिक ध्यान देना होगा। सौर ऊर्जा, इलेक्ट्रिक वाहन, जैव ईंधन और सार्वजनिक परिवहन के उपयोग को बढ़ावा देना समय की मांग है। जितना अधिक हम आयातित ऊर्जा पर निर्भर रहेंगे, उतना ही वैश्विक संकटों का प्रभाव हमारी अर्थव्यवस्था पर पड़ेगा।

इसके साथ ही स्थानीय उत्पादन और स्वदेशी उद्योगों को मजबूत करना भी अत्यंत आवश्यक है। यदि गांव और शहर आत्मनिर्भर बनें, स्थानीय उत्पादों का उपयोग बढ़े और छोटे उद्योगों को प्रोत्साहन मिले तो रोजगार भी बढ़ेगा और आयात पर निर्भरता भी कम होगी। 'लोकल टू ग्लोबल' की भावना केवल आर्थिक नीति नहीं बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा का भी आधार बन सकती है। महंगाई से मुकाबले के लिए सरकार और समाज दोनों को मिलकर कुछ ठोस कदम उठाने होंगे। सरकार को आवश्यक वस्तुओं की उपलब्धता सुनिश्चित करनी होगी, जमाखोरी और कालाबाजारी पर कठोर नियंत्रण रखना होगा तथा गरीब और मध्यम वर्ग को राहत देने वाली योजनाओं को प्रभावी ढंग से लागू करना होगा।

***

भारत में सोने के जैसा सांस्कृतिक महत्व है, वैसा दुनिया के किसी देश में नहीं है। हजारों साल से यह कीमती धातु घर-घर में सांस्कृतिक प्रकाश स्तम्भ के रूप में स्थापित है। केवल एक धातु से अधिक, प्रतिष्ठित विरासत है, जो पीढ़ी-दर पीढ़ी चलती चली आ रही है।

सोने-चांदी की खरीद से बचें

प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी की एक अपील के बाद अचानक देश में सोने की कीमत और उसकी खरीद को लेकर चर्चा चल निकली है। इस अपील के अर्थ को समझने के पहले हमें सोने के महत्व को समझना होगा। दुनिया में डॉलर को सबसे विश्वसनीय मुद्रा समझा जाता है, पर सोना उससे भी ज्यादा विश्वसनीय सम्पदा है। वैश्विक स्तर पर सोने का कारोबार अमेरिकी डॉलर में होता है, इसलिए डॉलर के साथ भारतीय रुपए की विनिमय दर में उतार-चढ़ाव स्थानीय बाजार में सोने की कीमत निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

भारत प्रत्येक वर्ष लगभग 700 से 800 टन सोना बाहर से खरीदता है। इस कारण से यह दुनिया के सबसे बड़े सोना आयात करने वाले देशों में से एक है। सोने का घरेलू उत्पादन काफी कम है। कुल आवश्यकता का लगभग 90 से 95 प्रतिशत सोना बाहर से खरीदा जाता है। भारतीय कारीगर सोने के जेवर बनाकर उनका निर्यात भी करते हैं, इसलिए कुछ सोना बाहर भी जाता है। सोने के रासायनिक उपयोग भी हैं। अस्तु, इसकी खरीद का हमारे मुद्राकोष पर सीधा प्रभाव पड़ता है। प्रधान मंत्री ने सोने की खरीद से बचने की सलाह इसीलिए दी है क्योंकि पश्चिम एशिया की लड़ाई के कारण भारत के सामने ऊर्जा संकट पैदा हो गया है। हमें पेट्रोलियम आयात करने के लिए विदेशी मुद्रा की आवश्यकता है। इस लड़ाई के कारण हमारे विदेशी मुद्राकोष पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

प्रमोद जोशी

सर्राफा में तेजी

भारत के सर्राफा बाजारों में पिछले कुछ महीनों से तेजी का दौर चल रहा है। प्रधान मंत्री की अपील के अलावा भारत सरकार ने सोने और चांदी की खरीद पर काबू पाने के लिए 13 मई से सोने और चांदी के आयात पर 10 प्रतिशत बेसिक कस्टम ड्यूटी और 5 प्रतिशत एग्रीकल्चर इंफ्रास्ट्रक्चर एंड डेवलपमेंट सेस लगाया है।

इस ताजा बढ़ोतरी के बाद सोने और चांदी पर वसूली जाने वाली इम्पोर्ट ड्यूटी 6 प्रतिशत से बढ़कर 15 प्रतिशत हो गई है, जिससे चांदी की कीमत लगभग 25,600 रुपए प्रति किलोग्राम और सोने की कीमत लगभग 15,000 रुपए प्रति 10 ग्राम बढ़ गई हैं। इस निर्णय के अंतर्गत सोना, चांदी, प्लेटिनम और जेवरात में लगने वाली वस्तुओं तथा कीमती धातुओं से जुड़े औद्योगिक आयात पर बढ़ी हुई ड्यूटी लगेगी।

सोने और चांदी के आयात पर इंपोर्ट ड्यूटी बढ़ाए जाने का सीधा असर इन सोने और चांदी का व्यापार करने वाले कारोबारी और कम्पनियां इंपोर्ट ड्यूटी में हुई बढ़ोतरी को खुदरा ग्राहकों से ही वसूलती हैं। ऐसे में इंपोर्ट ड्यूटी में भारी बढ़ोतरी होने से खुदरा खरीदारी करने वाले ग्राहकों को अब पहले की तुलना में काफी ज्यादा कीमत चुकानी होगी। अखिल भारतीय सर्राफा संघ के अनुसार देशभर के बाजारों में सोने और चांदी की कीमतों में तेजी की सम्भावना है।

वर्ष 2025-26 में भारत का पेट्रोलियम, खनिज तेल और उसके उत्पादों का आयात 173 अरब डॉलर और सोने का आयात 71.9 अरब डॉलर था। इन पंक्तियों को लिखते समय डॉलर के मुकाबले रुपए की कीमत लगभग 95.2 डॉलर

है। इसमें और गिरावट आने पर हमें विदेशी सामान खरीदने पर और ज्यादा रुपए खर्च करने पड़ते हैं। प्रधान मंत्री केवल सोने की ही नहीं बल्कि पेट्रोलियम की खपत और विदेश-यात्राएं कम करने की अपील की है, जिनमें विदेशी मुद्रा खर्च होती है।

विदेशी-मुद्रा का पलायन

वैश्विक अनिश्चितता के कारण शेयर बाजार से विदेशी निवेशक अपनी पूंजी भी देश से बाहर ले जा रहे हैं। इसका परिणाम बाहरी खाते पर दबाव के रूप में सामने आ रहा है। रुपए के मूल्य में गिरावट का अनुभव किया जा सकता है। प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने जनता से अपील की है कि देश की अर्थव्यवस्था को अस्थिरता से बचाने के लिए और विशेषतौर से विदेशी मुद्रा बचाने के लिए किफायतकारक को अपनाएं। उन्होंने विशेषकर इलेक्ट्रिक वाहनों का उपयोग करने, सोना न खरीदने और विदेश यात्रा स्थगित करने की अपील की है। उनकी इस अपील के पीछे मंशा यह है कि आयातित वस्तुओं पर निर्भरता कम की जाए और विदेशी मुद्रा बचाई जाए। यह अपील भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए पश्चिम एशिया में चल रही लड़ाई के परिप्रेक्ष्य में ऊर्जा आपूर्ति संकट की गम्भीरता को रेखांकित करती है।

विदेशी मुद्रा भंडार

लड़ाई शुरू होने के बाद से भारत के विदेशी मुद्रा भंडार में 38 अरब डॉलर की गिरावट और खनिज तेल की कीमतों के 100 डॉलर प्रति बैरल से ऊपर बने रहने के कारण बढ़ता दबाव नीति निर्माताओं के लिए चिंता का विषय है। प्रधान मंत्री के आह्वान के पीछे प्रमुख कारण है सोने का आयात और विदेश-यात्राओं पर विदेशी मुद्रा के व्यय का बढ़ना। पिछले दो वर्षों में सोने का आयात बिल लगभग दोगुना होकर 2025-26 में 72 अरब डॉलर हो गया है।

विदेश-यात्रा पर उदारीकृत रेमिटेंस स्कीम के अंतर्गत व्यय 2025-26 के पहले 11 महीनों में, इस स्कीम का 57 प्रतिशत यानी कुल 26.34 अरब डॉलर में 15 अरब डॉलर रहा। विदेशी संस्थागत निवेशक भारतीय बाजारों से डॉलर खींच रहे हैं, जिसके कारण मुद्रा भंडार घटकर 691 अरब डॉलर तक पहुंच गया है। फरवरी में यह भंडार 728.49 अरब डॉलर के सर्वकालिक उच्च स्तर पर था।

देश में जब सरकार और घरों में रखे सोने के भंडार को मिला दें, तब सम्भवतः वह दुनिया के सबसे सोने के भंडार में से एक होगा। भारतीय रिजर्व बैंक के पास इस समय लगभग 881 टन सोना है। इसके आधार पर हमारा देश 7वें या 8वें स्थान पर आता है, पर असली सम्पदा सामान्य घरों में छिपी है।

***

50+ YEARS OF MOMENTUM
अर्थ सहकारेण कल्याणम्

दि कल्याण जनता सहकारी बँक लि.
मल्टी-स्टेट शेड्युल्ड बँक

सोने तारण कर्ज

जलद कर्ज

कमी प्रक्रिया शुल्क

व्याजदर

९.५०%* वार्षिक

* अटी व शर्ती लागू

TOLL FREE: 1800 233 1919 kalyanjanata.in KJSBank

स्वाद और अनुभूति की एक चुस्की

चाय केवल एक पेय नहीं है अपितु यह एक परम्परा बन चुकी है। यह प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकता बन गई है। प्रातकाल: उठते ही सर्वप्रथम सबको चाय चाहिए। इसके बिना दिवस प्रारम्भ ही नहीं होता।

डॉ. सौरभ मालवीय

चाय का सामाजिक महत्व

जल के पश्चात् चाय विश्व का सर्वाधिक पिया जाने वाला पेय माना जाता है। चाय विभिन्न संस्कृतियों को जोड़ने का कार्य कर रही है। हमारे देश में 'चाय पे चर्चा' से कोई भी अनभिज्ञ नहीं है। भारत में चाय केवल प्रातःकाल का प्रारम्भ ही नहीं अपितु सामाजिक संवाद का माध्यम है। बेड टी एवं नुक्कड़ की चाय की दुकान से लेकर कॉर्पोरेट ऑफिस के ब्रेक रूम तक चाय लोगों को समीप लाती है। बहुत से लोग ऐसे हैं कि उन्हें नींद खुलते ही चाय चाहिए। चाय पीने के पश्चात् ही वे अपना बिस्तर त्यागते हैं। इसीलिए इसे बेड टी कहा जाता है। वास्तव में चाय पीने से आलस्य दूर हो जाता है और शरीर में स्फूर्ति आ जाती है। जो लोग देर रात्रि तक कार्य करते हैं, उन्हें चाय की अत्यंत आवश्यकता होती है। चाय पीने से नींद नहीं आती और व्यक्ति सुचारू रूप से कार्य कर लेता है। जिस प्रकार सम्बंधियों एवं मित्रों को भोजन पर आमंत्रित किया जाता है, उसी प्रकार लोगों को चाय पर भी आमंत्रित किया जाता है। अतिथियों को सर्वप्रथम चाय ही दी जाती है। अनेक लोग ऐसे हैं कि ग्रीष्मकाल में उन्हें शरबत पेय दिया जाए तो इसे पीने के पश्चात् वे चाय का आग्रह करते हैं और कहते हैं कि उन्हें चाय ही पीनी है। यदि किसी से पूछो कि वह ठंडा लेना पसंद करेगा अथवा गर्म तो वह चाय ही मांगेगा।

चाय के विषय में समय-समय पर अनेक रोचक समाचार मिलते रहते हैं, जैसे इंग्लैंड के नागरिक प्रतिदिन 16 करोड़ चाय के कप पी जाते हैं। भारत भी इसमें कम नहीं है। यहां इससे अधिक ही चाय पिये जाने की सम्भावना है। यहां स्थान-स्थान पर चाय की दुकानें मिल जाती हैं। यह भी एक रोचक तथ्य है कि काली चाय का उपयोग कुल चाय का 75 है। काली चाय की सबसे सर्वाधिक खपत हमारे देश भारत में होती है। अमेरिका में 80 प्रतिशत चाय की खपत आइस टी के रूप में होती है।

कुल्हड़ चाय

अनेक प्रकरणों में भारतीय अपनी जड़ों की ओर लौट रहे हैं। चाय की बात करें तो पूर्व में कांच के गिलास में चाय दी जाती थी। इसके पश्चात् प्लास्टिक और कागज से निर्मित कप आ गए। अब कुल्हड़ भी आ चुके हैं। इनमें चाय पीने का अपना ही स्वाद होता है।

चाय का स्वास्थ्य पर प्रभाव

चाय के विषय में शोध होते रहते हैं और इनकी रिपोर्ट्स आती रहती हैं। एक शोध के अनुसार चाय में एक 'एल थेनाइन' नाम का तत्व होता है, जो मस्तिष्क की शक्ति में वृद्धि करने में सहायक है। यह मानसिक तनाव को कम करता है। ऑस्ट्रेलिया में हुए एक शोध के अनुसार चाय पीने से अस्थियां सुदृढ़ होती हैं।

शोधों के अनुसार चाय में एंटी ऑक्सीडेंट्स होते हैं, जो बढ़ती आयु के प्रभाव को

कम करते हैं। चाय खाली पेट नहीं पीनी चाहिए। ऐसा करने से एसिडिटी की समस्या हो सकती है। इससे भूख भी प्रभावित होती है अथवा भूख लगनी बंद हो जाती है। ऐसे में व्यक्ति भोजन नहीं करता, जिससे उसके स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ता है।

बहुत से लोग अत्यधिक उबाली हुई और अधिक पत्ती की चाय पीना पसंद करते हैं, वे इसे कड़क चाय कहते हैं। ऐसे चाय शरीर के लिए अत्यधिक हानिकारक होती है। इससे पेट में अल्सर हो सकता है। ऐसी अत्यधिक चाय पीने से कैंसर की आशंका भी बढ़ जाती है।

चाय दिवस

उल्लेखनीय है कि चाय दिवस का प्रारम्भ 15 दिसम्बर 2005 को नई दिल्ली से हुआ था। एक वर्ष पश्चात् श्रीलंका में चाय दिवस मनाया गया। इसके पश्चात् विश्वभर में अंतरराष्ट्रीय चाय दिवस मनाया जाने लगा। वर्ष 2015 में भारत सरकार ने संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन के माध्यम से चाय दिवस को वैश्विक स्तर पर मनाने का प्रस्ताव रखा। संयुक्त राष्ट्र महासभा को यह प्रस्ताव पसंद आया और उसने इसे स्वीकार कर लिया। इस प्रकार 21 मई को आधिकारिक रूप से 'अंतरराष्ट्रीय चाय दिवस' की घोषणा की गई, तब से प्रतिवर्ष 21 मई को विश्वभर में यह दिवस मनाया जाता है। वैश्विक स्तर पर चाय दिवस मनाने का उद्देश्य इसके उत्पादन एवं व्यापार से सम्बंधित श्रमिकों के अधिकारों की रक्षा करना तथा चाय उत्पादन को प्रोत्साहित करना है।

चाय का इतिहास

चाय का इतिहास अत्यंत रोचक है। मान्यता है कि चाय का प्रारम्भ लगभग 5 हजार वर्ष पूर्व चीन में हुआ था। कहा जाता है कि चीन के राजा शैन नुंग के समक्ष गर्म जल का प्याला रखा गया था। समीप में उगे एक पौधे की पत्तियां उसमें गिर गईं। इसके कारण जल का रंग बदल गया एवं उसमें से सुगंध आने लगी। राजा ने उसे पीया, तो उसे इसका स्वाद अत्यंत पसंद आया। इसे पीने के पश्चात् राजा ने नई ऊर्जा एवं स्फूर्ति का अनुभव किया। राजा ने कहा कि अब इसे प्रतिदिन उसे दिया जाए। इस प्रकार चाय पीने का प्रारम्भ हुआ। भारत में भी चाय का इतिहास अत्यंत प्राचीन है। अंग्रेजों ने 1830 के दशक में असम में इसकी बागवानी प्रारम्भ की। इसके पश्चात् चाय का व्यवसाय बढ़ता गया। परिणामस्वरूप आज भारत विश्व का द्वितीय सबसे बड़ा चाय उत्पादक देश है। चाय के उपभोक्ता के रूप में भारत द्वितीय स्थान पर है। अपनी उत्पादित कुल चाय का लगभग 70-80 प्रतिशत भाग घरेलू स्तर पर ही उपभोग हो जाता है। काली चाय के निर्यात के मामले में भारत तृतीय स्थान पर है। यह 2 दर्जन से अधिक देशों में चाय निर्यात करता है। यहां से सर्वाधिक काली चाय का निर्यात किया जाता है।

***

अलसाए मन को सुबह-सुबह चाय की हर चुस्की में आनंद व सुख की अनुभूति होती है। मन बहुत बेचैन हो तब भी चाय की चुस्की सुकून देती है। किसी से दिल की बात कहनी हो तो भी चाय की चुस्की मन को गुदगुदाती है।

स्निग्धा अवतंस

वाह! क्या चाय है

भोर की पहली किरण के संग,जब आंगन में धूप उतरती है,
तभी रसोई के कोने से चाय की खुशबू फैलती है।
केतली गुनगुन गीत सुनाए, पानी धीरे-धीरे खौले,
अदरक, तुलसी, इलायची मिल मन के सारे द्वार ही खोले।

भोर की सुनहरी किरणें अपना प्रकाश फैलाती हैं तो एक नई ऊर्जा तन-मन में अंगड़ाई लेती है। ऐसे में जब हाथ में एक गरम चाय की प्याली हो तो तन और मन में नई उर्जा, नई स्फूर्ति व ताजगी का अनुभव होने लगता है। वह काली चाय हो या फिर हर्बल टी हो या फिर लेमन टी या अन्य किसी प्रकार की चाय हो। सबका स्वभाव एक सा होता है, बस अंतर उसके पीने वालों की पसंद का होता है। अब चलिए हम बात करते हैं चाय के प्रकारों की। जी हां, चाय के कई प्रकार होते हैं, रंग होते हैं, यहां तक कि चाय की चुस्कियों में भी अलग स्वाद व सुगंध होते हैं।

चाय मुख्य रूप से कैमेलिया साइनेंसिस पौधे की पत्तियों से बनती है। कैमेलिया साइनेंसिस एक उपोष्णकटिबंधीय/उष्णकटिबंधीय सदाबहार पौधा है जो मूल रूप से एशिया का है, हालांकि व्यावसायिक रूप से इसकी खेती पूरी दुनिया में की जाती है। चाय बनाने के लिए पौधे को परिपक्व होने में 5-7 साल लगते हैं और इसकी खेती 100 साल से भी अधिक समय तक की जा सकती है। जिन्हें ऑक्सीकरण के आधार पर 6 मुख्य प्रकारों में बांटा गया है। ब्लैक, ग्रीन, व्हाइट, ऊलोंग, पु-एर्ह और येलो टी। इसके अलावा हर्बल चाय (बिना कैफीन वाली) और फ्लेवर्ड चाय भी बहुत लोकप्रिय हैं।

ब्लैक टी : यह सबसे अधिक ऑक्सीकृत चाय है, जो गहरे रंग और मजबूत स्वाद वाली होती है।

ग्रीन टी: यह ऑक्सीकृत नहीं होती, जिसके कारण यह स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होती है और इसका रंग हल्का हरा होता है।

व्हाइट टी: यह सबसे कम प्रोसेस्ड चाय है, जो बहुत कोमल पत्तियों से बनती है।

ऊलोंग चाय: यह आंशिक रूप से ऑक्सीकृत होती है, जो ब्लैक और ग्रीन टी के बीच का स्वाद देती है।

पु-एर्ह चाय: यह एक किण्वित चाय है, जिसका स्वाद समय के साथ और बेहतर होता जाता है।

हर्बल चाय: यह चाय की पत्तियों से नहीं बल्कि जड़ी-बूटियों, फलों या फूलों से बनती है (जैसे- कैमोमाइल, अदरक चाय)।

लोकप्रिय भारतीय चाय: मसाला चाय: अदरक, इलायची, लौंग और दालचीनी के साथ।

भारत में हर घर में बनने वाली पानी, दूध, चाय की पत्ती व चीनी के मिश्रण से बनाई जाने वाली चाय जो बेहद प्रचलित व लोकप्रिय है। जिसका आनंद, स्वाद व सुगंध सहज ही होठों पर मुस्कान बिखेर देती है। इसमें भी कई प्रकार हैं यानी कुछ लोग इस चाय में अदरक व इलायची को कूट कर डालते हैं तो कुछ लोग लेमनग्रास डालकर चाय की हर चुस्की में आनंद का अनुभव करते हैं और उनका मन कह उठता है वाह! क्या चाय है।

***

चाय में छिपी अर्थव्यवस्था

व्यापार

दीपक कुमार द्विवेदी

21 मई को दुनिया भर में अंतरराष्ट्रीय चाय दिवस मनाया जाता है। यह दिन केवल एक पेय पदार्थ के महत्व को बताने के लिए नहीं है बल्कि देश की अर्थव्यवस्था की कहानी कहती है।

भारत में चाय का रिश्ता केवल स्वाद से नहीं है बल्कि यह लोगों की आदत, भावना और जीवनशैली का हिस्सा बन चुकी है। यहां सुबह की शुरुआत चाय से होती है और दिनभर की थकान भी उसी से उतरती है। गांवों की चौपाल हो, शहर का ऑफिस हो, रेलवे स्टेशन हो या सड़क किनारे की छोटी-सी दुकान, हर जगह चाय लोगों को जोड़ने का काम करती है।

भारत में चाय का इतिहास लगभग 200 वर्ष पुराना माना जाता है। वर्ष 1823 में स्कॉटिश अधिकारी रॉबर्ट ब्रूस ने असम के जंगलों में चाय के पौधों की पहचान की थी। उस समय अंग्रेज चीन से चाय मंगाते थे और चीन पर निर्भरता कम करना चाहते थे। इसके बाद अंग्रेजों ने असम और दार्जिलिंग में बड़े पैमाने पर चाय की खेती शुरू की। वर्ष 1839 में असम कम्पनी की स्थापना हुई, जिसे भारत की पहली व्यावसायिक चाय कम्पनी माना जाता है। धीरे-धीरे भारत की चाय यूरोप के बाजारों तक पहुंची और देखते ही देखते यह दुनिया के बड़े व्यापारों में शामिल हो गई।

आज भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा चाय उत्पादक देश है। भारतीय चाय बोर्ड और अंतरराष्ट्रीय बाजार रिपोर्टों के अनुसार भारत प्रत्येक साल लगभग 1.2 से 1.3 अरब किलोग्राम चाय का उत्पादन करता है। वर्ष 2024

में भारत का कुल उत्पादन लगभग 1.28 अरब किलोग्राम रहा। हालांकि यह उत्पादन वर्ष 2023 की तुलना में कुछ कम था। इसकी सबसे बड़ी वजह असम और पूर्वोत्तर भारत में बाढ़, अत्यधिक गर्मी और अनियमित बारिश रही, जिसने फसल को हानि पहुंचाया। असम भारत का सबसे बड़ा चाय उत्पादक राज्य है। यहां अकेले लगभग 650 से 700 मिलियन किलोग्राम चाय पैदा होती है, जो देश के कुल उत्पादन का लगभग आधा हिस्सा है। असम की चाय अपने मजबूत स्वाद और गहरे रंग के कारण रूस और मध्य-पूर्व के देशों में बहुत पसंद की जाती है। पश्चिम बंगाल का दार्जिलिंग क्षेत्र अपनी खुशबूदार चाय के लिए पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है। दार्जिलिंग टी को शैम्पेन ऑफ टी कहा जाता है। दक्षिण भारत के नीलगिरि क्षेत्र की चाय यूरोपीय बाजारों में अपनी अलग पहचान रखती है।

भारत में चाय केवल उत्पादन तक सीमित नहीं है बल्कि उपभोग के मामले में भी देश-दुनिया में सबसे आगे है। यहां पैदा होने वाली लगभग 80 प्रतिशत चाय देश के भीतर ही प्रयोग होता है। भारत में प्रत्येक दिन करोड़ों कप चाय पी जाती है। रेलवे स्टेशन, बस स्टैंड, ढाबे, कॉलेज, कार्यालय और छोटे कस्बों की गलियों तक चाय का बाजार फैला हुआ है। यही कारण है कि चाय भारत की अनौपचारिक अर्थव्यवस्था का भी महत्वपूर्ण हिस्सा है। छोटे चाय विक्रेताओं से लेकर बड़े कैफे तक, लाखों लोगों की आय चाय से जुड़ी हुई है।

भारतीय चाय उद्योग का कुल बाजार मूल्य वर्ष 2024 में लगभग 11.5 अरब डॉलर आंका गया। अनुमान है कि वर्ष 2033 तक यह बाजार लगभग 15 अरब डॉलर तक पहुंच सकता है। यह वृद्धि केवल उत्पादन के कारण नहीं बल्कि बदलती जीवनशैली और बढ़ती मांग का परिणाम भी है। पहले जहां सामान्य दूध वाली चाय का चलन ज्यादा था, वहीं अब ग्रीन टी, ब्लैक टी, ऑर्गेनिक टी, व्हाइट टी और हर्बल टी का बाजार तेजी से बढ़ा है।

वैश्विक स्तर पर चाय उद्योग का बाजार भी लगातार बढ़ रहा है। वर्ष 2024 में वैश्विक चाय बाजार का मूल्य लगभग 55 से 60 अरब डॉलर के बीच माना गया। अनुमान है कि वर्ष 2030 तक यह बाजार 70 अरब डॉलर से अधिक हो सकता है। चीन दुनिया का सबसे बड़ा उत्पादक देश है, लेकिन भारतीय चाय अपनी विविधता और गुणवत्ता के कारण अंतरराष्ट्रीय बाजार में मजबूत पहचान बनाए हुए हैं। भारतीय मसाला चाय, असम टी और दार्जिलिंग टी की मांग यूरोप, अमेरिका और मध्य-पूर्व के देशों में तेजी से बढ़ी है। भारत प्रत्येक साल लगभग 240 से 250 मिलियन किलोग्राम चाय का निर्यात करता है। रूस लम्बे समय से भारतीय चाय का सबसे बड़ा खरीदार रहा है। इसके अलावा ईरान, इराक, संयुक्त अरब अमीरात, अमेरिका, ब्रिटेन और मिस्र भी भारतीय चाय के प्रमुख आयातक देशों में शामिल हैं। वर्ष 2024 में भारत के चाय निर्यात का कुल मूल्य लगभग 6 से 7 हजार करोड़ रुपये के बीच दर्ज किया गया। इससे भारत को विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है और निर्यात क्षेत्र को मजबूती मिलती है।

चाय उद्योग का सबसे बड़ा असर रोजगार पर दिखाई देता है। भारत में लगभग 1.2 करोड़ लोग प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से इस उद्योग से जुड़े हुए हैं। चाय बागानों में काम करने वाले मजदूर, छोटे किसान, ट्रांसपोर्ट व्यवसायी, फैक्ट्री कर्मचारी, पैकेजिंग उद्योग, होटल और चाय की छोटी दुकानों तक हर स्तर पर रोजगार के अवसर पैदा होते हैं। असम और दार्जिलिंग के चाय बागानों में बड़ी संख्या में महिलाएं काम करती हैं। सुबह से शाम तक चाय की पत्तियां तोड़ना बहुत कठिन काम होता है, लेकिन इन्हीं हाथों की मेहनत दुनिया भर के कपों तक पहुंचती है।

चाय उद्योग का असर केवल खेती और व्यापार तक सीमित नहीं है। इससे पैकेजिंग उद्योग, ट्रांसपोर्ट, मशीन निर्माण, होटल व्यवसाय और पर्यटन क्षेत्र को भी लाभ मिलता है। दार्जिलिंग, असम और नीलगिरि के चाय बागानों में टी टूरिज्म तेजी से विकसित हो रहा है। देश-विदेश से पर्यटक चाय बागानों में घूमने और वहां की जीवनशैली देखने पहुंचते हैं। हालांकि इस उद्योग के सामने चुनौतियां भी कम नहीं हैं। जलवायु परिवर्तन सबसे बड़ी समस्या बनकर सामने आया है। असम और पूर्वोत्तर भारत में बाढ़, अत्यधिक गर्मी और अनियमित बारिश के कारण वर्ष 2024 में चाय उत्पादन लगभग 7 से 8 प्रतिशत तक घट गया। इसके बाद भी बाजार में चाय की कीमतों में लगभग 18 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई।

***

तेजोमय होगा हर पल
पूजा होगी सफल!
पितांबरी
होमकेअर डिवीजन
For Diya & lamps only
Pitambari
Deepshakti
Power of Spirituality!
25g EXTRA
The Original & No.1 Brand
Pitambari
Shining Powder
Pleasant Fragrance
दीपशक्ती तेल
शांत और
अखंड दिये के लिए
पितांबरी शायनिंग पाउडर
तांबा-पीतल के बर्तनों को
चमकाने के लिए
Pitambari Products Pvt. Ltd.
Maharashtra: 8291853804, North: 7011012599, South: 9886553105, East: 7752023380, 9867102999,
CRM: 022 - 6703 5564 / 5699, Toll Free: 18001031299. Visit: www.pitambari.com
CIN: U52291MH1989PTC051314

डॉ. अर्पण जैन 'अविचल'

जलसंकट बनता रोड़ा

जल केवल जीवन का आधार नहीं है बल्कि कृषि, उद्योग, ऊर्जा, स्वास्थ्य और जनजीवन स्थिरता का भी मुख्य स्रोत है। इसलिए जलसंकट को केवल पर्यावरणीय समस्या मानना पर्याप्त नहीं है। विकसित भारत बनने के मार्ग को अवरुद्ध करने वाले तत्वों में जल संकट बड़ा रोड़ा होगा।

देश के कई भूभाग पर गर्मी का हाहाकार चरम पर है। वृक्ष या तो सूख रहे हैं या फिर गर्मी से जल रहे हैं, कुछ जगह तो सीमेंट के जंगल यानी भवन, फ्लैट और कॉलोनियां बनाने के चक्कर में आमादा मानव वृक्षों की अंधाधुंध कटाई कर रहा है। ऐसे विकट दौर में अब भारत में जल संकट भी होने लगा है, भूजल स्तर लगातार गिर रहा है। अभी तो मानसून आने में बहुत समय है, लेकिन कई शहरों में बोरिंग सूख रहे हैं, तालाबों का जलस्तर घट चुका है और नदियों की क्षमता से अधिक दोहन होने से वहां भी आपूर्ति कम हो गई है। इस कारण देश में पानी की मांग और आपूर्ति के बीच अंतर पैदा हो गया है और यह अंतर देश के भविष्य के लिए चिंता का विषय है।

तकनीकी समृद्ध आधुनिक दौर में भी महानगरों से लेकर छोटे कस्बों और ग्रामीण क्षेत्रों के लोग बूंद-बूंद पानी के लिए संघर्ष करते दिखाई देते हैं। कहीं टैंकरों के पीछे लम्बी कतारें लगती हैं तो कहीं महिलाएं कई किलोमीटर दूर से पानी लाने को मजबूर होती हैं। यहां तक कि पानी के लिए खूनी संघर्ष भी हो जाते हैं। नगरीय निकायों द्वारा जलापूर्ति में कटौती की घोषणा तो बहुत ही सामान्य बात बन चुकी है। यह स्थिति केवल प्राकृतिक कारणों का परिणाम नहीं है बल्कि हमारे विकास मॉडल, जल प्रबंधन की कमियों और सामाजिक उदासीनता का भी दुष्परिणाम है।

भारतीय जनमानस जलपूर्ति के लिए केवल वर्षा जल पर अधिक निर्भरता रखती है और यदि वर्षा सामान्य से कम हो जाए, देर से आए या असमान रूप से वितरित हो तो जलाशयों और भूजल दोनों पर दबाव बढ़ जाता है। कई क्षेत्रों में कुल वार्षिक वर्षा पर्याप्त होती है, लेकिन उसके संग्रहण की व्यवस्था

नहीं होने से अधिकांश पानी बहकर निकल जाते हैं।

भारत में वर्तमान में जल संकट एक अत्यंत गम्भीर और चिंतनीय स्थिति में है, जहां 60 करोड़ से अधिक लोग (लगभग आधी जनसंख्या) अत्यधिक जल तनाव का सामना कर रहे हैं। नीति आयोग के अनुसार प्रति व्यक्ति जल उपलब्धता 1,700 घन मीटर से कम होकर लगभग 1,100 घन मीटर रह गई है और 2030 तक पानी की मांग आपूर्ति से दोगुनी होने की आशंका है।

नीति आयोग की रिपोर्टों के अनुसार ही देश के अनेक शहर भूजल संकट की दिशा में बढ़ रहे हैं। सेंट्रल ग्राउंड वॉटर बोर्ड

लगातार चेतावनी भी देता रहा है कि कई राज्यों में भूजल का दोहन पुनर्भरण की तुलना में कहीं अधिक हो रहा है। इसका अर्थ है कि हम पृथ्वी के नीचे जमा उस जल भंडार को तेजी से समाप्त कर रहे हैं, जिसे बनने में वर्षों लगते हैं। 'ग्लोबल कमिशन ऑन द इकोनॉमिक्स ऑफ वॉटर' की एक ताजा रिपोर्ट में वैश्विक जल संकट की चेतावनी दी गई है, जिसमें वर्ष 2030 तक मांग आपूर्ति से 40% अधिक होने का अनुमान है और इससे खाद्य उत्पादन और अर्थव्यवस्थाओं को बहुत बड़ा संकट का भय है। भारत तो पहले से ही अंतर-राज्यीय जल विवादों और संरक्षण चुनौतियों से जूझ रहा है। बढ़ते तापमान, अधिक वाष्पीकरण और भूजल की कमी से भारत के कई राज्य जूझ रहे हैं। महाराष्ट्र के कई शहर जैसे मुम्बई, लातूर, औरंगाबाद, पुणे जैसे कई शहरों का भूजल स्तर बहुत कम होने से प्रतिवर्ष गर्मी के मौसम में हाहाकार मच जाता है। वहीं मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ के भी कई शहरों का जल स्तर लगभग समाप्त होने की कगार पर है।

मुम्बई नगर निगम ने शहर में 10 प्रतिशत पानी की कटौती लागू कर दी है। यह कदम जलाशयों में पानी के घटते स्तर को देखते हुए एहतियात के तौर पर उठाया गया है। नगर निगम के अनुसार यह प्रतिबंध तब तक जारी रहेगा जब तक पर्याप्त बारिश नहीं होती और जलाशयों में उपयोग योग्य पानी का स्तर संतोषजनक नहीं हो जाता। यह निर्णय इसलिए लिया गया है क्योंकि झीलों में पानी का भंडार लगातार कम हो रहा है और मौसम विभाग ने अगले साल एल नीनो और हिंद महासागर डाइपोल के प्रभाव के कारण मानसून सामान्य से कम रहने की सम्भावना जताई है। यही हाल मध्य प्रदेश सहित दिल्ली, राजस्थान, उत्तर प्रदेश व अन्य कई राज्यों के भी है क्योंकि जल संकट गहरा रहा है और समाधान के लिए दो ही विकल्प खुले हुए हैं या तो प्राकृतिक भूजल का दोहन हो या फिर वर्षाकाल पर निर्भर रहें। हमारा देश चारों ओर से समुद्र से घिरा हुआ है, परंतु हमारे पास वृहद स्तर पर वह तकनीक अब तक नहीं विकसित हो पाई, जिसमें समुद्री खारे पानी को पीने योग्य मीठे जल में बदला जा सके। फिर आज भी बारिश के पानी को संचित-संरक्षित करने की दिशा में देश उदासीन है। तालाब, बावड़ियां, कुएं और झीलें भारतीय जल संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा थे। शहरी विस्तार, अतिक्रमण और उपेक्षा के कारण ये स्रोत या तो समाप्त हो गए या प्रदूषित हो गए। इनके नष्ट होने से वर्षा जल का प्राकृतिक संचयन बाधित हुआ। कृषि, उद्योग और घरेलू उपयोग के लिए भूजल पर निर्भरता लगातार बढ़ी है। मुफ्त अथवा सस्ती बिजली के कारण कई क्षेत्रों में किसान अत्यधिक मात्रा में पानी खींचते हैं। परिणामस्वरूप भूजल स्तर तेजी से नीचे जा रहा है। कई शहरों में पुराने कुएं और हैंडपम्प सूख चुके हैं। कंक्रीट और डामर से ढंकी सड़कों तथा भवनों ने भूमि की जल सोखने की क्षमता घटा दी है। वर्षा जल धरती में समाने की बजाए सीधे नालों से बह जाता है। शहरों में जल निकासी व्यवस्था और जल संरक्षण का समन्वय प्राय: कमजोर रहता है। इसके अलावा कई नगर निगमों की पाइपलाइनें पुरानी हैं। रिसाव और अवैध कनेक्शनों के कारण बड़ी मात्रा में पानी उपभोक्ताओं तक पहुंचने से पहले ही नष्ट हो जाता है। कुछ शहरों में यह हानि 30 से 40 प्रतिशत तक है। फिर तापमान वृद्धि, अनियमित वर्षा, सूखा पड़ना और अचानक भारी वर्षा जैसी घटनाएं जल प्रबंधन को और कठिन बना रही हैं। जल संकट से उबरने के लिए भारत सरकार भी चिंतित है, उन्होंने जल शक्ति मंत्रालय का गठन विभिन्न जल सम्बंधी विभागों को साथ कार्य करने हेतु किया। जल जीवन मिशन, अटल भूजल योजना व अमृत मिशन जैसी योजनाएं तैयार कर इस दिशा में प्रयास भी किए हैं। राज्य सरकारें भी गहनता से काम कर रही हैं।

***

हनी ट्रैप से भारतीय क्रिकेटरों को बचाने के लिए बीसीसीआई द्वारा उठाए गए कदम इस बात का संकेत हैं कि अब सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जा रही है। मजबूत प्रोटोकॉल, सतर्क निगरानी और निरंतर जागरूकता खिलाड़ियों को सुरक्षित वातावरण प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

हनी ट्रैप पर बीसीसीआई के कड़े तेवर

भारतीय क्रिकेट आज केवल एक खेल नहीं बल्कि एक वैश्विक ब्रांड और विशाल उद्योग बन चुका है। खिलाड़ियों की लोकप्रियता सीमाओं से परे फैल चुकी है। वे न केवल मैदान पर प्रदर्शन के लिए पहचाने जाते हैं बल्कि सोशल मीडिया, विज्ञापन अभियानों, ब्रांड एंडोर्समेंट और अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंटों के माध्यम से भी निरंतर सार्वजनिक दृष्टि में रहते हैं। यही व्यापक पहचान उन्हें अपार अवसर देती है, लेकिन इसके साथ कुछ संवेदनशील जोखिम भी जुड़ जाते हैं। इन्हीं जोखिमों में एक गम्भीर मुद्दा है हनी ट्रैप।

पिछले कुछ वर्षों में सामने आई घटनाओं और सुरक्षा समीक्षाओं के बाद भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने खिलाड़ियों और फ्रेंचाइजियों के लिए स्पष्ट और सख्त दिशा-निर्देश जारी किए हैं। इनका उद्देश्य खिलाड़ियों की व्यक्तिगत सुरक्षा सुनिश्चित करना, उनकी मानसिक स्थिरता बनाए रखना और भारतीय क्रिकेट की विश्वसनीयता को मजबूत करना है। यह कदम केवल प्रशासनिक औपचारिकता नहीं बल्कि बदलते समय की आवश्यक प्रतिक्रिया है।

हनी-ट्रैप मूलतः एक ऐसी रणनीति है, जिसमें किसी व्यक्ति को भावनात्मक आकर्षण, निजी सम्बंध या ऑनलाइन सम्पर्क के माध्यम से जाल में फंसाया जाता है। कई मामलों में इसका उद्देश्य ब्लैकमेल करना, गोपनीय जानकारी प्राप्त करना, आर्थिक लाभ उठाना या किसी की प्रतिष्ठा को हानि पहुंचाना होता है। सार्वजनिक जीवन से जुड़े व्यक्तियों, विशेषकर खिलाड़ियों के लिए यह चुनौती अधिक संवेदनशील हो जाती है क्योंकि उनकी व्यस्त दिनचर्या, यात्राएं और लोकप्रियता उन्हें अधिक संकट में डाल सकती हैं।

डिजिटल युग ने इस संकट को और जटिल बना दिया है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म और मैसेजिंग ऐप्स के माध्यम से किसी से भी सम्पर्क स्थापित करना अब बहुत आसान हो गया है। फर्जी प्रोफाइल बनाकर विश्वास जीतना और फिर व्यक्तिगत जानकारी निकालने का प्रयास करना संगठित गिरोहों के लिए भी सरल हो गया है। ऐसे में खिलाड़ियों को अतिरिक्त सतर्क रहने की आवश्यकता होती है क्योंकि एक छोटी सी चूक भी गम्भीर परिणाम दे सकती है।

बीसीसीआई द्वारा जारी गाइडलाइन इसी संदर्भ में तैयार की गई हैं। इनका मुख्य जोर जागरूकता और रोकथाम पर है। खिलाड़ियों को राय दी गई है कि वे अनजान या संदिग्ध सोशल मीडिया खातों से दूरी बनाए रखें और किसी भी प्रकार की निजी जानकारी- जैसे यात्रा कार्यक्रम, होटल विवरण, टीम रणनीति या आंतरिक चर्चाओं को साझा न करें। यदि किसी सम्पर्क या स्थिति में असामान्यता अनुभव हो तो तुरंत टीम प्रबंधन या सुरक्षा अधिकारियों को सूचित करना चाहिए। यह पारदर्शिता और सतर्कता की नीति किसी भी सम्भावित संकट को समय रहते नियंत्रित करने में सहायक हो सकती है।

इसके अतिरिक्त सोशल मीडिया अकाउंट की गोपनीयता सेटिंग मजबूत रखने, अनावश्यक व्यक्तिगत पोस्ट से बचने और सार्वजनिक मंच पर सीमित जानकारी साझा करने की राय भी दी गई है। विदेशी दौरों और बड़े टूर्नामेंटों के दौरान निर्धारित सुरक्षा प्रोटोकॉल का पालन करना अनिवार्य है। समय-समय पर आयोजित होने वाले जागरूकता सत्र खिलाड़ियों को साइबर सुरक्षा, कानूनी प्रावधानों और जोखिम प्रबंधन के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं। इन उपायों का उद्देश्य खिलाड़ियों को डराना नहीं बल्कि उन्हें सुरक्षित और आत्मविश्वासपूर्ण वातावरण उपलब्ध कराना है।

भास्कर दूबे

आईपीएल 2026 के संदर्भ में सुरक्षा को और अधिक प्राथमिकता दी गई है। फ्रेंचाइजियों को स्पष्ट निर्देश दिए गए हैं कि टीम होटलों, बसों और प्रतिबंधित क्षेत्रों में केवल अधिकृत व्यक्तियों को ही प्रवेश दिया जाए। निगरानी तंत्र को मजबूत करने पर जोर दिया गया है ताकि किसी भी प्रकार की अनधिकृत गतिविधि पर तुरंत कार्रवाई सम्भव हो सके। यह कदम लीग की छवि और खिलाड़ियों की सुरक्षा दोनों को ध्यान में रखकर उठाया गया है।

आईपीएल इतिहास में सुरक्षा और अनुशासन का मुद्दा कई बार चर्चा में रहा है। वर्ष 2013 का स्पॉट-फिक्सिंग प्रकरण भारतीय क्रिकेट के लिए एक महत्वपूर्ण मोड़ था। इस घटना के बाद एंटी-करप्शन तंत्र को और सुदृढ़ किया गया। इसी तरह कर्नाटक प्रीमियर लीग से जुड़े विवादों और घरेलू टूर्नामेंटों में सामने आए ब्लैकमेल मामलों ने यह दिखाया कि खेल जगत में केवल मैदान के भीतर ही नहीं बल्कि बाहर भी सतर्कता आवश्यक है। इन घटनाओं ने प्रशासन को सुरक्षा ढांचे को लगातार अपडेट करने की प्रेरणा दी।

एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू डिजिटल प्लेटफॉर्म से जुड़ा है। डेटिंग ऐप्स, सोशल मीडिया और ऑनलाइन इंटरैक्शन के माध्यम से ब्लैकमेल की घटनाएं सामने आई हैं। ऐसे मामलों में व्यक्तिगत वीडियो या निजी सामग्री का दुरुपयोग कर दबाव बनाया जाता है। इन घटनाओं ने यह स्पष्ट किया कि खिलाड़ियों को केवल शारीरिक सुरक्षा ही नहीं बल्कि डिजिटल सुरक्षा के प्रति भी जागरूक रहना चाहिए।

यदि कोई खिलाड़ी हनी-ट्रैप या ब्लैकमेल का शिकार होता है तो इसका प्रभाव केवल व्यक्तिगत स्तर तक सीमित नहीं रहता। मानसिक तनाव, चिंता और असुरक्षा की भावना प्रदर्शन को प्रभावित कर सकती है। खेल में एकाग्रता और आत्मविश्वास अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। ऐसे में बाहरी दबाव टीम की सामूहिक ऊर्जा और वातावरण पर भी असर डाल सकता है। यही कारण है कि सुरक्षा उपायों को खिलाड़ियों के पेशेवर विकास का हिस्सा माना जा रहा है।

हालांकि यह भी महत्वपूर्ण है कि इन गाइडलाइंस को प्रतिबंध के रूप में नहीं देखा जाए। यह व्यवस्था खिलाड़ियों को स्वतंत्रता के साथ सुरक्षित वातावरण प्रदान करने के लिए बनाई गई है। उद्देश्य यह है कि खिलाड़ी बिना किसी चिंता के अपने प्रदर्शन पर ध्यान केंद्रित कर सकें और देश तथा लीग का नाम रोशन करें। ***

राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत करनेवाली सामाजिक व पारिवारिक पत्रिका

हिंदी विवेक
We Work For A Better World
मासिक पत्रिका

शुल्क ₹ 500

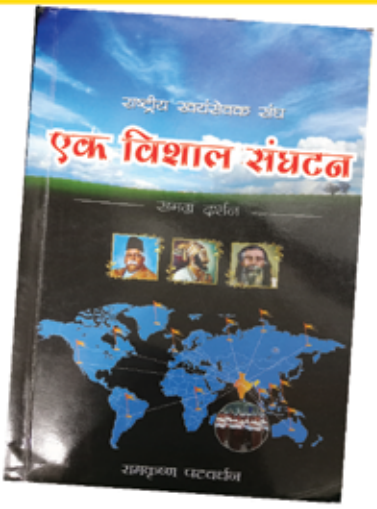

रा. स्व. संघ की स्थापना से लेकर शतकपूर्ति की यात्रा के विभिन्न पड़ावों तथा भविष्य के उद्देश्यों का सम्पूर्ण संकलन व आंकलन करने वाली पुस्तक

ऑनलाईन पंजीयन करने के बाद कृपया 9594991884 पर कॉल करके सूचित करें या व्हाट्सअप करें।

Draft or Cheque should be drawn in the name of : HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA-HINDI VIVEK

Bank : Bank of Maharashtra Branch : Prabhadevi

A/C No. : 60085108000 IFSC : MAHB0000318

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

सम्पर्क - 9594991884 Email : hindivivekvargani@gmail.com

डॉ. मोनिका शर्मा

जेन जी असामाजिक तो नहीं हैं, लेकिन सामाजिक भी नहीं हैं। इनकी अपनी एक अलग सोच है, अपना दायरा है जिसकी परिपाटी में ही वे रहना पसंद करते हैं। आखिर जेन जी को ऐसा क्यों देखा जा रहा है, इस आलेख में विस्तार से चर्चा की गई है।

हम तो भई ऐसे हैं...

जेन जी यानी जनरेशन जेड। वह पीढ़ी, जो 1997-2012 के बीच जन्मी है। तकनीकी उन्नति और सामाजिक-पारिवारिक बदलावों के बीच दुनिया में आने वाली यह पीढ़ी पारम्परिक सामाजिकता के भाव से जरा दूर ही है। बड़ों की सलाह-विचार व विमर्श से सामाजिक समारोह में मेल-मिलाप करने या घर आए मेहमानों का अभिवादन भर कर लेने वाली इस पीढ़ी के बच्चे सहज सोशलाइजेशन की परिपाटी संग थोड़े असहज हैं। जिसका अर्थ यह है कि डिजिटल नेटिव कही जाने वाली इस जनरेशन के सोशल मेल-जोल का तौर-तरीका परम्परागत रंग-ढंग का नहीं है। जैसा पहले की पीढ़ियों में रहा था। चिंतनीय यह है कि अपने ही परिवेश और परिजनों से बढ़ती इस अनकही सी दूरी की बहुत से दुष्परिणाम हैं। जेन जी के विचार और व्यक्तित्व ही नहीं पूरे सामाजिक ढांचे पर इस बदलते व्यवहार का असर पड़ रहा है। बदलते व्यवहार की जड़ें- असल में समाज से जुड़कर भी टूट रही इस पीढ़ी को न तो पूरी तरह सामाजिक कहा जा सकता है और ना ही असामाजिक। जिसके कारण न केवल इस पीढ़ी के अभिभावक बल्कि खुद जेन जी भी एक उलझन में हैं। हालांकि टेकी (नई तकनीक) और स्क्रीन-अडिक्ट मानी जाने वाली जनरेशन के व्यवहार में आए बदलाव के भी कई कारण हैं। इन बच्चों ने संयुक्त परिवार कम देखा हैं। नाते-रिश्तेदारों का आना-जाना भी एकल परिवारों में कम ही होता है। बहुत से जेन जी बच्चों के दोनों अभिभावक कामकाजी रहे हैं। देखा जाए तो इनका पालन-पोषण ही स्थापित सामाजिक तौर-तरीकों की बजाए तकनीक के साथ हुआ है। जेन जी पीढ़ी

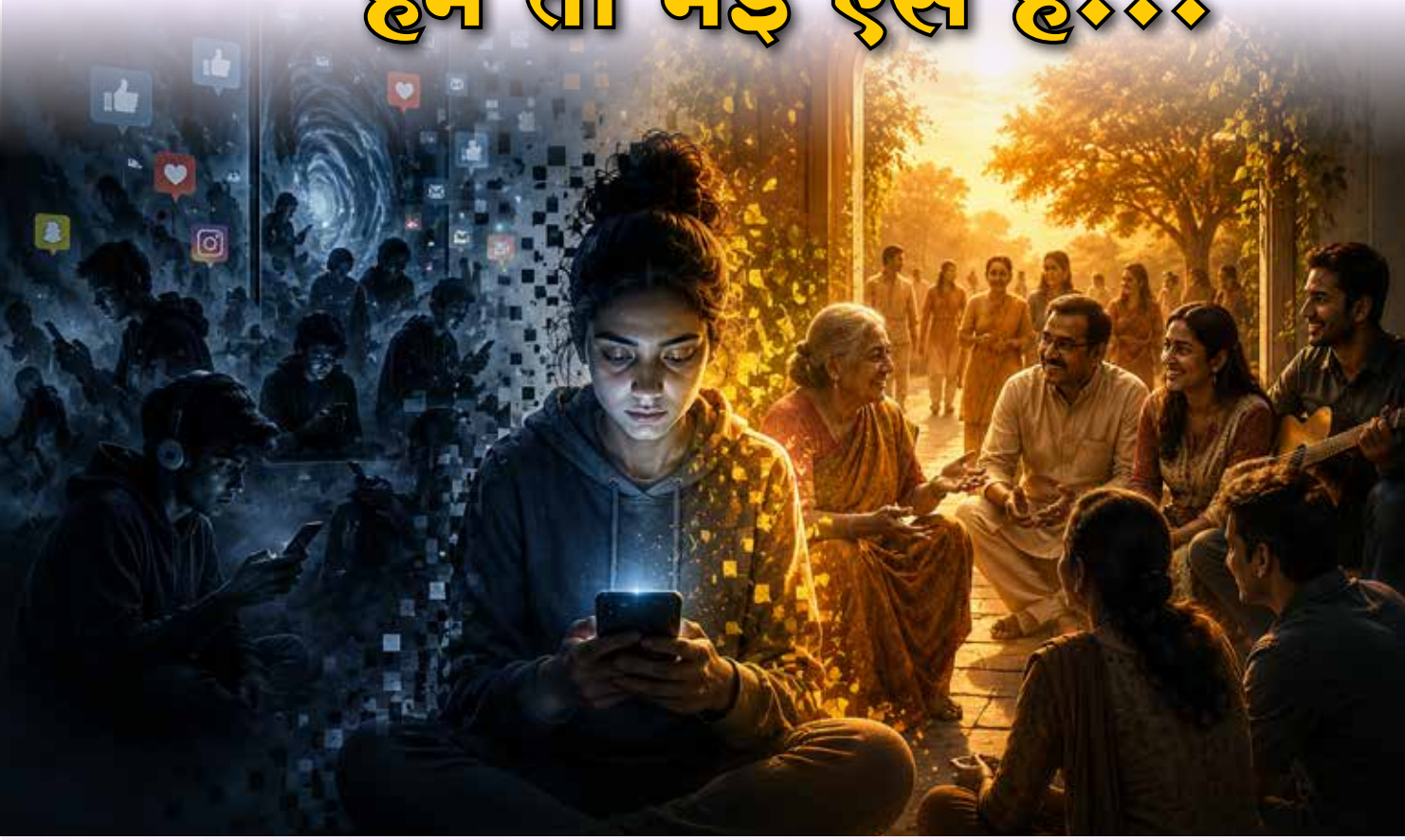

का लम्बा समय दादी-दादा, चाचा-चाची या किसी रिश्तेदार या आस-पड़ोस के हमउम्र बच्चों के साथ नहीं बल्कि अकेले ही बीता है। साथ ही वास्तविक दुनिया में सामाजिक मेल-जोल की कमी और वर्चुअल संसार में अति सक्रियता भी उनके बदलते व्यवहार का कारण है। ऐसे में बचपन और किशोरावस्था में ही स्क्रीन के सामने समय बिताने वाली इस पीढ़ी का जुड़ाव लोगों से कम हो गया। यहां तक कि इनके जीवन में सगे-सम्बंधियों की उपस्थिति ही नहीं बल्कि दोस्ती का दायरा भी डिजिटल प्लेटफॉर्म्स तक ही सिमट गया है। इनके लिए आपसी कम्युनिकेशन का माध्यम ही तकनीकी संसार रहा है। यही कारण है कि स्क्रीन-टू-स्क्रीन संवाद की जीवनशैली ने मानवीय उपस्थिति के अर्थ को समझने ही नहीं दिए।

बदलती सोच और व्यवहार- जनरेशन जेड की सोच और बर्ताव का पूरी तरह अव्यावहारिक नहीं, पर थोड़ा असहज करने वाला अवश्य है। कुछ अलग हट कर सोचने व करने की चाह के कारण ही यह पीढ़ी समाज से कटकर रहने लगी है। जेन जेड के आयुवर्ग में आने वाली इस पीढ़ी की वर्तमान आयु लगभग 20-25 वर्ष के बीच है। सामाजिकता की कमी के कारण अनेक युवा विवाह कर घर बसाने में रुचि नहीं दिखा रहे हैं। यहां तक कि माता-पिता से भी इनका जुड़ाव कम हो रहा है। आपसी मेल-जोल ना होने से अपने समाज की परम्परागत रीति-रिवाजों से अनजान हैं। स्मार्टफोन और इंटरनेट के बीच पली-बढ़ी 80 प्रतिशत से अधिक जेन जी अपनी सामाजिक आवश्यकताओं, सलाहों और सूचनाओं के लिए भी सोशल मीडिया पर निर्भर हैं। दादी-नानी से व्रत, उत्सव या किसी प्रकार की जानकारी लेने में रुचि नगण्य है। माता-पिता से किसी त्योहार को मनाने के रंग-ढंग पूछना आवश्यक नहीं समझा जाता। घर-परिवार के आयोजनों में इनकी भागीदारी मात्र अब औपचारिकता बनकर रह गई है। जेन जी पूरी तरह असामाजिक न होकर भी सामाजिकता के असली भाव से दूर हो रहे हैं। वर्तमान समय में युवा जीवन के हर पहलू पर इसका प्रतिकूल असर दिख रहा है। वास्तविक जीवन में सामाजिक मेल-जोल कम होने से आपसी सामंजस्य और आत्मीयता के अर्थ भी कम ही समझ आते हैं। समाज के साथ-साथ उनके व्यक्तित्व पर भी इसका विपरीत प्रभाव हुआ है। इस पीढ़ी के बच्चे कम आयु में ही मानसिक स्वास्थ्य सम्बंधी चुनौतियां से जूझ रहे हैं।

2023 में आंध्र प्रदेश की एसआरएम यूनिवर्सिटी और कई अन्य संस्थानों द्वारा जिनमें हैदराबाद, चेन्नई, बैंगलुरु, पुणे, मुंबई, अहमदाबाद, कोलकाता और दिल्ली जैसे 8 बड़े शहरों के जेन जी को लेकर हुए रिसर्च के अनुसार 70 प्रतिशत युवा गम्भीर अवसाद के घेरे में हैं, जबकि 60 प्रतिशत डिप्रेशन और 70 प्रतिशत हाई लेवल डिस्ट्रेस यानी पैनिक अटैक, अनिद्रा और अत्यधिक मूड स्विंग्स के शिकार हैं। जेन जी में सोशल मीडिया पर दूसरों की आदर्श जीवन देखने से उपजी हीन भावना से सोशल एंग्जायटी बढ़ रही है। लगता है जैसे यह पीढ़ी एक चक्रव्यूह में फंसी है। एक ओर वर्चुअल दुनिया में आइडियल लाइफस्टाइल देखकर वे लोगों से मिलने-जुलने से बचते हैं तो दूसरी ओर इस मेलजोल की कमी भी उन्हें अवसाद और अकेलेपन के घेरे में लाती है। इतना ही नहीं सामाजिक गतिविधियों से दूर होने के चलते जनरेशन जेड जीवन की व्यावहारिक समझ से भी दूर हैं। वैवाहिक रिश्ते हों या सहज मित्रता, इनके अधिकतर रिश्तों में अनिश्चितता ही देखने को मिलती है।

सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि जेन जी का यह व्यवहार समाज को किस दिशा में ले जाएगा? वास्तविक धरातल पर देखें तो यह दिशा सकारात्मक नहीं कही जा सकती। हालांकि कई मोर्चों पर इस पीढ़ी के विचार बहुत स्पष्ट-सधे भी हैं। क्लाइमेट चेंज, राजनीतिक मुखरता, रचनात्मकता, उद्यमिता और समानता जैसे मुद्दों पर जनरेशन जेड बेहतर स्थिति बनाने की समर्थक है। बावजूद इसके अनिश्चितताओं से भरी दुनिया में अपनी जड़ों से कट जाने के जोखिम कम नहीं हैं। सामाजिक परिवेश से बढ़ती दूरी इस पीढ़ी के लिए ही नहीं आने वाली पीढ़ियों के लिए भी हानिकारक है। जेन जी के जीवन का यह तौर-तरीका समग्र से मानवीय जुड़ाव के रंग फीके करने वाला है।

***

आपकी आवाज को बुलंद करने वाली
सम्पूर्ण पारिवारिक व सामाजिक मासिक पत्रिका

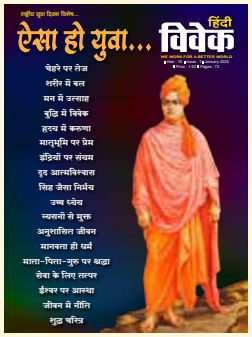

हिंदी **विवेक**

" We Work For A Better World"

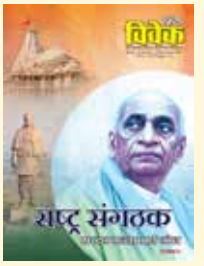

सदस्यता शुल्क

- वार्षिक मूल्य : रु. 500/-
- त्रैवार्षिक मूल्य : रु. 1,200/-
- पंचवार्षिक मूल्य : रु. 1,800/-
- संरक्षक मूल्य : रु. 25,000/-
- विदेशी सदस्यता शुल्क वार्षिक : रु. 5,000/-

खुद ग्राहक बनें व बनाएं

- जन्म दिन तथा अन्य समारोहों में हिंदी विवेक उपहार के रूप में भेंट करें।
- मित्रों, रिश्तेदारों तथा शुभचिंतकों को हिंदी विवेक की सदस्यता प्रदान करें।
- अपने दिवंगत स्नेहीजनों की स्मृति में 11, 21, 51 या 101 पाठकों को सदस्यता दें।
- विवाह के अवसर पर सदस्यता उपहार में दें।
- नववर्ष की शुभकामना के रूप में ग्रीटिंग कार्ड के स्थान पर हिंदी विवेक का सदस्यता रसीद प्रदान करें।

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

हिंदी विवेक कार्यालय

प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर 10, सेक्टर - 2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे,
हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई - 400067

सम्पर्क : +91 95949 91884

hindivivekvargani@gmail.com / hindivivekadvt@gmail.com

जन्म दिवस 17 मई

मधुभाई कुलकर्णी एक सरल, सहज व व्यावहारिक थे। जिसके कारण कोई भी बेझिझक अपने मन की बात उनसे कह सकता था। उनका सम्पूर्ण जीवन देश, संघ, धर्म और समाज के लिए समर्पित था।

संघ वृक्ष के परिपक्व फल मधुभाई कुलकर्णी

मधुभाई के नाम से प्रसिद्ध संघ के वरिष्ठ प्रचारक माधव विनायक कुलकर्णी का जन्म 17 मई, 1938 को कोल्हापुर (महाराष्ट्र) में हुआ था। उनकी प्राथमिक शिक्षा कर्नाटक के चिकौडी में हुई। वहीं उन्होंने संघ शाखा में जाना शुरू किया। 1954 में विद्यापीठ हाई स्कूल, कोल्हापुर से मैट्रिक तथा 1958 में मुम्बई के रूपारेल कॉलेज से बी.ए. की डिग्री प्राप्त कर कुछ समय उन्होंने मुम्बई के बिक्रीकर कार्यालय में काम किया। 1960-61 में दयानंद कालेज, सोलापुर से उन्होंने बी.एड की डिग्री ली और इसके बाद 1962 में वे जीवनव्रती प्रचारक के नाते संघ साधना में लग गए। शुरू के 22 वर्ष उन्होंने महाराष्ट्र में ही जलगांव, छत्रपति संभाजी नगर (औरंगाबाद), सोलापुर तथा पुणे आदि में तहसील, जिला और विभाग प्रचारक जैसे दायित्व निभाए। उनके कार्यकाल में पुणे के तलासरी में एक विशाल संघ शिविर हुआ, जिसके कुशल प्रबंधन की चर्चा आज भी की जाती है। 1984 में उन्हें गुजरात प्रांत प्रचारक की जिम्मेदारी दी गई। वे 1996 में पश्चिम क्षेत्र प्रचारक, 2003 में अखिल भारतीय बौद्धिक प्रमुख तथा 2009 में केंद्रीय कार्यकारिणी के सदस्य बने। आयुवृद्धि सम्बंधी समस्याओं एवं स्वास्थ्य ढलने के कारण उन्होंने 2015 में सभी जिम्मेदारियां छोड़ दीं। इसके बाद संभाजीनगर में उनके निवास की व्यवस्था की गई। इस दौरान वे पत्र-पत्रिकाओं में लेख आदि के माध्यम से संघ विचार जनता तथा कार्यकर्ताओं तक पहुंचाते रहते थे। मधुभाई का जीवन सादा, अनुशासित तथा संघरूप था। वे थे तो महाराष्ट्र के निवासी, पर गुजरात पहुंचकर वे पूरी तरह गुजराती हो गए। महाराष्ट्र और गुजरात में धोती अलग तरह से पहनते हैं। मधुभाई ने गुजरात में सदा गुजराती धोती ही पहनी। वहां का खानपान और भाषा-बोली भी उन्होंने अपना ली। उस दौरान जो कार्यकर्ता विकसित हुए, वे न केवल संघ बल्कि अन्य अनेक क्षेत्र तथा उच्च स्थानों पर रहकर देश और राज्य की सेवा कर रहे हैं।

विजय कुमार

1975 में प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी ने अपनी सत्ता बचाने के लिए देश में आपातकाल लगा दिया। संघ पर भी प्रतिबंध लग गया। ऐसे में संघ ने आंदोलन एवं सत्याग्रह का सहारा लिया। उस दौरान सभी प्रचारकों को बाहर रहने के आदेश थे। अतः मधुभाई ने अपना नाम माधव सोनटक्के रख लिया। वे वेश बदलकर तथा भूमिगत रहकर तानाशाही विरोधी आंदोलन को संचालित करते रहे। पुलिस उन्हें खोजती रही, पर वे हाथ नहीं आए। मधुभाई कहते थे कि संघ के जितने पास जाओगे, उतना ही समझोगे। फिर उतना ही वह प्रकट भी होगा। वे भाषण या उपदेश की बजाए अपने आचरण से लोगों को प्रशिक्षित करते थे। संघ के बारे में लिखित उनकी पुस्तक 'अथातो संघ जिज्ञासा' बहुचर्चित हुई। यह मुख्यतः युवा वर्ग के लिए लिखी गई थी। इसका कई भाषाओं में अनुवाद भी हुआ। वे कन्नड़, हिंदी, अंग्रेजी, मराठी, गुजराती तथा तेलुगु भाषा के जानकार थे।

मधुभाई विद्वान होते हुए भी बहुत सरल एवं व्यावहारिक थे। कोई भी उनसे खुलकर अपने मन की बात कर सकता था। स्वयंसेवकों के साथ उनके परिजनों से भी वे अच्छे सम्बंध बनाकर रखते थे तथा उनके सुख-दुख में काम आते थे। वे कहते थे कि समाज के साथ खड़े रहना हमारी जिम्मेदारी है। संघ की सबसे बड़ी पूंजी उसकी विश्वसनीयता है। यह कम नहीं होनी चाहिए। पूरा जीवन देश, धर्म और समाज के लिए समर्पित करने वाले मधुभाई ने मृत्यु के बाद भी समाजसेवा का अप्रतिम उदाहरण प्रस्तुत किया। उन्होंने देहदान का संकल्प लिया था। अतः उनकी देह चिकित्सा शास्त्र के छात्रों के अध्ययन, अभ्यास तथा शोध के लिए रामचंद्र इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस, आर.के दमाणी मेडिकल कॉलेज को दे दी गई।

***

भारतीय बैडमिंटन, तीरंदाजी और हॉकी भारतीय खेल जगत में अपार ऐतिहासिक सफलताएं प्राप्त कर रहा है, जो आने वाले भविष्य के लिए स्वर्णिम व सुखद संकेत है। इन ऐतिहासिक सफलताओं को लेकर खेलप्रेमियों में एक बार फिर से उत्साह देखा जा रहा है।

ऊंची उड़ान भरते भारतीय खेल

कभी सुर्खियों में रहने वाला भारतीय खेल जगत इन दिनों हाशिए पर है। आईपीएल की चकाचौंध को छोड़ दें तो भारतीय बैडमिंटन, तीरंदाजी और हॉकी जगत की सफलताओं या असफलताओं पर खेलप्रेमियों का ध्यान ही नहीं जा रहा है। एशियाई खेलों और राष्ट्रमंडल खेलों की तैयारी में जुटा भारतीय खेल जगत इन दिनों ऐतिहासिक सफलताएं प्राप्त कर रहा है, जो भविष्य के लिए एक सुखद संकेत है। अगले 10-12 वर्षों में भारत राष्ट्रमंडल खेल से लेकर ओलम्पिक तक की मेजबानी प्राप्त करने का प्रयास कर रहा है। उस दिशा में मजबूती से कदम बढ़ाने के लिए सबसे ज्यादा आवश्यक है देश में खेल का वातावरण बनाना और वैश्विक मंच पर ढेर सारी सफलताएं अर्जित करना। कमोबेश उसी दिशा में कदम बढ़ा रहा है भारतीय खेल जगत।

भारतीय शटल के बढ़ते कद

यह अतिशयोक्ति नहीं बल्कि सच्चाई है। इन दिनों ढाई इंच के शटल के दम पर बहुत ऊंची उड़ान भर रहा है भारतीय बैडमिंटन। यह दावा केवल इसलिए नहीं किया जा रहा है कि भारतीय बैडमिंटन पुरुष टीम ने पिछले दिनों थॉमस कप में कांस्य पदक जीत कर इतिहास रच दिया बल्कि इसलिए कि भारतीय बैडमिंटन ने लगभग डेढ़ दशक पहले से एक के बाद एक सफलताएं प्राप्त करते हुए विश्व बैडमिंटन जगत में जो धमक बनाई थी, उसे अब परवान चढ़ा रहे हैं भारतीय युवा बैडमिंटन खिलाड़ी।

प्रवीण सिन्हा

2008 बीजिंग ओलम्पिक के दौरान सायना नेहवाल ने जब विश्व की धुरंधर खिलाड़ियों को हराना शुरू किया तो उनके मुकाबलों को 'सायना वर्सेज चायना' का नाम दिया जाने लगा था। सायना की समृद्ध परम्परा को किदाम्बी श्रीकांत, एच एस प्रणॉय, पी. वी. सिंधू और लक्ष्य सेन ने बखूबी आगे बढ़ाया। चीन, कोरिया, इंडोनेशिया, जापान और मलेशिया को कड़ी चुनौती देते हुए अब भारत ने विश्व बैडमिंटन जगत में स्वयं को एक महाशक्ति के रूप में स्थापित कर लिया है।

भारतीय टीम का पिछले तीन थॉमस कप टूर्नामेंट में से दूसरी बार पदक जीतना अद्भुत उपलब्धि मानी जा रही है। बैडमिंटन के विश्व कप के रूप में माने जाने वाले प्रतिष्ठित थॉमस कप में भारत ने जो सफलता प्राप्त की है, वह देश को विश्व बैडमिंटन की एक महाशक्ति सिद्ध करने के लिए काफी है। बैंकाक में चल रहे थाईलैंड ओपन में भी पी. वी. सिंधू और लक्ष्य सेन

सहित चिराग शेट्टी व सात्विक साईराज की जोड़ी जिस तरह से जलवा बिखेर रहे हैं, उससे विश्व बैडमिंटन जगत में सिद्ध हो चुका है कि वर्ष 2022 में भारत द्वारा पहली बार थॉमस कप खिताब जीतना एक तुक्का नहीं बल्कि एक नई महाशक्ति के रूप में उभरने का उद्घोष है। इसके बाद एक बार फिर से 2026 थॉमस कप का कांस्य पदक जीत भारतीय टीम ने सिद्ध कर दिया कि किसी भी विश्व स्तरीय स्पर्धाओं में अब उनकी उपस्थिति को हल्के में कतई नहीं लिया जा सकता है।युवास्टार लक्ष्य सेन, आयुष शेट्टी, सहित एच एस प्रणॉय व चिराग–सात्विक की जोड़ी के अनुभव के दम पर भारतीय पुरुष टीम धूमकेतु की तरह विश्व बैडमिंटन में उभरी है। भारतीय खेलप्रेमियों को कदाचित् यह आभास नहीं हो पाया है कि भारत विश्व का मात्र सातवां देश है जिनके नाम थॉमस कप में एक से अधिक पदक है। बैडमिंटन के दम पर भारत अब अंतरराष्ट्रीय स्पर्धाओं के अलावा ओलम्पिक खेलों में भी सशक्त दावेदारी पेश करने में सक्षम है।

स्वर्णिम निशाने साधते तीरंदाज

भारतीय महिला रिकर्व तीरंदाजी टीम ने इसी सप्ताह शंघाई में मेजबान चीन को फाइनल में 5–4 से हरा स्वर्णिम उपलब्धि प्राप्त की। हालांकि पूर्व विश्व चैंपियन दीपिका कुमारी के नेतृत्व में महिला तीरंदाजों ने कई बार धमाकेदार प्रदर्शन करते हुए भारतीय परचम लहराए हैं, लेकिन अभी तीरंदाजी विश्व कप स्टेज 2 का खिताब जीतना कई अर्थों में महत्वपूर्ण है। दीपिका, अंकिता भक्त और कुमकुम मोहोद की तिकड़ी ने फाइनल में विश्व चैंपियन चीन और सेमीफाइनल में 10 बार की ओलम्पिक चैंपियन कोरिया को 5–1 के भारी अंतर से हराकर सनसनी फैला दी। विश्व तीरंदाजी में अभी कादाचित् ही कोई ऐसी टीम होगी जो विश्व की नम्बर एक और दो टीम को एक ही मुकाबले में हराते हुए स्वर्ण पदक जीत ले। भारतीय महिला टीम ने ऐसा अद्भुत कारनामा कर देश का नाम रोशन किया। भारत को निरंतर कड़ी मेहनत और जीत की दृढ़ इच्छाशक्ति के दम पर 5 साल बाद विश्व कप का स्वर्ण पदक जीतने का अवसर मिला। वर्ष 2021 में जब भारत ने पिछली बार ग्वाटेमाला में मैक्सिको को हरा विश्व कप का स्वर्ण पदक जीता था तो भारतीय खेल जगत में खुशी की लहर दौड़ गई थी। उस समय की विश्व कप विजेता टीम में दीपिका और अंकिता भक्त भी शामिल थीं। इसके बाद दीपिका ने हालांकि कई बार विश्व की शीर्षस्थ खिलाड़ियों को मात दी, लेकिन वो टीम (महिला या मिश्रित) को शीर्ष पर नहीं पहुंचा सकीं। अब चीन और कोरिया जैसी अजेय टीमों को एक ही समय में मात देकर उन्होंने भारतीय तीरंदाजों को शिखर पर पहुंचाने की एक अलख जगाई है।

संकट में भारतीय हॉकी

इस बीच पूर्व दिग्गज हॉकी खिलाड़ी पी. आर. श्रीजेश को विदेशी प्रशिक्षकों के कारण हॉकी इंडिया द्वारा बर्खास्त करना भारतीय खेल जगत के लिए एक बड़ा झटका है। भारतीय खेल प्रशासक लगातार इस बात को अनदेखा कर रहे हैं कि जमीनी स्तर की टीमें तैयार करने के लिए देसी प्रशिक्षकों की आवश्यकता होती है।

***

समाजसेवी गणपत कोठारी को पत्नी शोक

राजस्थानी समाज के प्रसिद्ध उद्योगपति, समाजसेवी व राजस्थान फाउंडेशन के मुम्बई चैप्टर के प्रेसिडेंट गणपत कोठारी की धर्मपत्नी कांता कोठारी का विगत दिवस निधन हो गया। विदित हो कि 29 अप्रैल को राजस्थान स्थित उनके पैतृक गांव जसोल में 59 वर्ष की आयु में उनका निधन हुआ। कांता कोठारी की आत्मा की शांति हेतु विगत 2 मई को दादर स्थित योगी सभागार में प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया था। जिसमें महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री देवेंद्र फडणवीस, राजस्थान के मुख्य मंत्री भजनलाल शर्मा, महाराष्ट्र विधानसभा के अध्यक्ष राहुल नार्वेकर, विधान परिषद के सभापति राम शिंदे सहित विभिन्न व्यापारिक व सामाजिक संस्थाओं ने अपनी ओर से भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की। ईश्वर से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शांति व सद्गती प्रदान करें। हिंदी विवेक परिवार की ओर से भावपूर्ण श्रद्धांजलि। ॐ शांति शांति शांति:

***

डिजिटल जनगणना 2027 के आरम्भ होते ही धोखाधड़ी के मामले सामने आने लगे हैं। जिससे लोगों को सतर्क रहने की आवश्यकता है, ताकि वे ठगी के शिकार न हों। धोखाधड़ी से किस प्रकार सावधान रहें, इस आलेख में विस्तार से बताया गया है।

आप इन झांसों में मत आइए...

डिजिटल जनगणना 2027, विश्व का सबसे बड़ा जनगणना अभियान होगा, जिसमें डिजिटल तकनीकों का व्यापक उपयोग किया जाएगा। इसकी प्रमुख विशेषताओं में मोबाइल-आधारित डेटा संग्रह, जनगणना प्रबंधन और निगरानी प्रणाली के माध्यम से वास्तविक समय निगरानी, स्व-गणना की सुविधा, सटीक भौगोलिक मानचित्रण और जनसंख्या गणना के दौरान व्यापक जातिगत गणना शामिल हैं।

विदित हो कि इस जनगणना में लोगों के साथ धोखाधड़ी के भी कई मामले प्रकाश में आ रहे हैं, जिससे लोगाों को सावधान व सतर्क रहने की आवश्यकता है। यदि आप सतर्क व सावधान नहीं रहते हैं तो आपके साथ भी धोखाधड़ी हो सकती है। बहुत से साइबर ठग जनगणना के बहाने लोगों से उनकी व्यक्तिगत जानकारी प्राप्त कर उनके साथ ठगी कर रहे हैं। यहां तक कि साइबर ठग स्वयं को सरकारी अधिकारी बताकर जनगणना के नाम पर बैंक डिटेल्स, आधार नम्बर और मोबाइल नम्बर जैसी जानकारी प्राप्त कर रहे हैं। इसके बाद आपकी जानकारी का प्रयोग करके यह ठग आपको लूट लेते हैं, इससे आप सावधान रहें। यदि आपके घर आकर कोई स्वयं को सरकारी अधिकारी बताकर आपसे जानकारी मांगे या कॉल करके आपसे पर्सनल डिटेल्स मांगे तो आपको अपनी डिटेल शेयर नहीं करना चाहिए क्योंकि आपकी जानकारी का प्रयोग करके यह ठग आपको लूट लेते हैं। यह बात आप हमेशा ध्यान रखें कि सरकारी कर्मचारी कभी भी आपसे ओटीपी नहीं मांगेंगे, फिर चाहे वह जनगणना हो या फिर और कोई प्रक्रिया।

यदि कोई व्यक्ति जनगणना की प्रक्रिया के लिए आपसे आपके बैंक खाते की डिटेल्स मांग रहा है तो आप समझ लीजिए वह फ्रॉड है, ठग है। यदि किसी नम्बर से या मेल के जरिए आपसे इस तरह की कोई मांग की जाती है तो आप इन लोगों के विरुद्ध नेशनल साइबर क्राइम हेल्पलाइन पर शिकायत कर सकते हैं। इसके अलावा आप नेशनल साइबर हेल्पलाइन की आधिकारिक वेबसाइट पर जाकर अपनी शिकायत दर्ज करवा सकते हैं।

***

एक दृष्टि इधर भी

आम है या मशरूम ?

केरल के पलक्कड़ जिले के कराकुरस्सी गांव में अर्थ मैंगो के नाम से जानी जाने वाली एक दुर्लभ औषधीय मशरूम की खोज की गई है।

खेती के लिए जमीन खोदते समय एक किसान को यह कवक मिला। लगभग 20 भूमिगत मशरूम संरचनाएं पाई गईं, जिनकी पहचान बाद में शोधकर्ताओं द्वारा की गई।

पारम्परिक मान्यताओं के अनुसार यह मशरूम खांसी-जुकाम जैसी समस्याओं में लाभदायक माना जाता है।

***

अंध बच्चों के लिए- एआई स्मार्ट विजन ग्लास

अब दृष्टिबाधित बच्चों के लिए बड़ा सहारा बनेगा। एम्स की इस पहल से अब ऐसे लोगों को पढ़ने, चलने-फिरने और आसपास की दुनिया को समझने में सहायता मिलेगी। लोगों के सामने रोजमर्रा की जिंदगी में आने वाली चुनौतियों को कम करने की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण पहल है। आर्टिफिशल इंटेलिजेंस आधारित स्मार्ट विजन ग्लासेस के जरिए बहुत सीमा तक इस समस्या का हल निकल सकता है।

***

जरा इस ओर भी...

भारत में सबसे बड़ा सोलर किचन राजस्थान के माउंट आबू में ब्रह्माकुमारी संस्थान के शांतिवन परिसर में स्थित है।

यहां लगे विशाल सौर ऊर्जा संयंत्र हजारों लोगों के लिए गर्म, पौष्टिक, शाकाहारी भोजन पकाने के लिए सूर्य की शक्ति का उपयोग करता है। खाना पकाने के लिए भाप को छह इंसुलेटेड हेडर पाइपों के माध्यम से एकत्रित किया जाता है और एक केंद्रीय स्टीम ड्रम में भेजा जाता है। यहां से इसे रसोई के अंदर विशाल खाना पकाने के बर्तनों में वितरित किया जाता है।

***

खुदाई के दौरान मिला जलाधारी शिवलिंग

विश्व प्रसिद्ध महाकालेश्वर मंदिर के पास खुदाई के दौरान एक शिवलिंग निकला है। यह शिवलिंग जलाधारी में था। खुदाई करने वाले बुलडोजर चालक ने तत्काल मंदिर के अधिकारी को इसकी सूचना दी। इसके बाद यहां भक्त और पुजारी पहुंचने लगे। साथ ही दर्शन-पूजन का सिलसिला शुरू हो गया। बताया जाता है कि 2019 से महाकाल लोक निर्माण और अन्य निर्माण कार्य के दौरान कई जगह खुदाई के कार्य चल रहे हैं। इस दौरान भी कई शिवलिंग और अन्य देवी-देवताओं की प्रतिमा निकली थी। महाकाल मंदिर के पास बड़ा गणेश मंदिर क्षेत्र में टनल बनाने का काम चल रहा है। इस कार्य को लेकर यहां खुदाई हो रही है।

***

गुलामी के प्रतीकों से मुक्त होगी भारतीय रेल

ब्रिटिश शासन के दौरान भारतीय रेल का निर्माण मुख्यतः अंग्रेजों के आर्थिक और प्रशासनिक हितों के लिए किया गया था। रेलवे स्टेशनों के नाम, भवनों की स्थापत्य शैली, प्रशासनिक ढांचा तथा कई परम्पराएं उसी मानसिकता को

दर्शाती थीं। स्वतंत्रता प्राप्ति के दशकों बाद भी अनेक स्थानों पर वही प्रतीक और नाम बने रहे। अब सरकार और रेलवे प्रशासन इन प्रतीकों को भारतीय पहचान के अनुरूप बदलने का प्रयास कर रहे हैं। रेलवे बोर्ड ने सभी जोन को 14 मई 2026 तक इन बदलावों को लागू करने के सख्त निर्देश दिए हैं।

ट्रेन मैनेजर: 'गार्ड' को अब 'ट्रेन मैनेजर' के रूप में जाना जाएगा।

पोशाक में बदलाव: अंग्रेजों के जमाने के 'बंद गला कोट' को औपचारिक पोशाक से हटा दिया गया है। नए पोशाक में अशोक चक्र के बटन होंगे।

'सैलून कोच' में सुधार: पहले की शाही जीवनशैली के प्रतीक इन कोचों को अब अत्याधुनिक सुविधाओं (जैसे वाई-फाई, कॉन्फ्रेंस टेबल) के साथ निरीक्षण वाहनों में बदला जा रहा है।

औपचारिक अभिवादन में बदलाव: पत्राचार में 'योर ओबीडिएंट सर्वेंट' जैसे शब्दों की जगह 'भवदीय' का उपयोग किया जा रहा है।

अनुकूलन: पुराने पीतल के बर्तनों और औपनिवेशिक प्रथाओं को हटाकर डिजिटल सूचना प्रणालियां स्थापित की जा रही हैं।

कर्मचारी उपाधि: 'खलासी' का नाम बदलकर 'सहायक' किया जा रहा है। उक्त कदम रेलवे को औपनिवेशिक बोझ से मुक्त करने और भारतीय संस्कृति व 'विकसित भारत' की भावना को बढ़ावा देने के लिए उठाया जा रहा है।

***

विक्रेताओं पर टेढ़ी दृष्टि

महाराष्ट्र सरकार ने फलों, सब्जियों और अनाज विक्रेताओं पर टेढ़ी दृष्टि डाली है। जी हां, ये वो विक्रेता हैं, जो फलों, सब्जियों और अनाजों को कृत्रिम तरीके से पकाते हैं या फिर उस पर चमक बढ़ाने के लिए कृत्रिम रंगों का प्रयोग करते हैं। महाराष्ट्र सरकार ने इन विक्रेताओं को यह भी चेतावनी दी है कि यदि वे फलों, सब्जियों और अनाजों पर हानिकारक रसायनों का प्रयोग करते हुए पकड़े गए तो उनका लाइसेंस रद्द कर दिया जाएगा। राज्य के विपणन मंत्री जयकुमार रावल ने चेतावनी दी है कि यदि निरीक्षण के दौरान कोई व्यापारी या संस्थान फलों, सब्जियों और अनाजों पर हानिकारक रसायनों का प्रयोग करते हुए दोषी पाया जाता है, तो उनका लाइसेंस रद्द कर दिया जाएगा। विपणन निदेशालय ने सभी कृषि उपज बाजार समितियों, निजी बाजारों और प्रत्यक्ष विपणन लाइसेंस धारकों को नियमित निरीक्षण करने के भी निर्देश दिए हैं। हानिकारक रसायनों के उपयोग के मामलों को खाद्य सुरक्षा और मानक अधिनियम, 2006 के अंतर्गत खाद्य एवं औषधि प्रशासन के पास भेजा जाएगा। साथ ही साथ फलों और सब्जियों के भंडारण और परिवहन में पतले प्लास्टिक

और थर्मोकोल का उपयोग न करने का निर्देश भी दिया गया है क्योंकि इससे भी केमिकल का असर हो सकता है। बिना लाइसेंस के कृषि उपज खरीदने/बेचने वाले व्यापारियों और किसान उत्पादक कम्पनियों के विरुद्ध भी कार्रवाई की जाएगी। यह कदम उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य की सुरक्षा और बाजार में शुद्धता बनाए रखने के लिए उठाया गया है क्योंकि कई क्षेत्रों से रसायनों के दुरुपयोग की शिकायतें मिल रही थीं। फलों, सब्जियों और अनाजों पर हानिकारक रसायन का प्रयोग इसलिए किया जाता है जिससे उसे शीघ्र पकाया जाए, साथ ही वे दिखने में चमकदार व आकर्षक लगे। विदित हो कि इस तरह के हानिकारक रसायन के प्रयोग से कई गम्भीर बीमारियां होने का भय बढ़ जाता है।

***

TJSB SAHAKARI BANK LTD. MULTI-STATE SCHEDULED BANK

Bharose ka Bank Bhavishya ka Bank

now at just 8.10%* p.a. with
TJSB Auto Finance Loan.

T&C Apply*

www.tjsb.bank.in | ✆ : 022- 48897204